

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि
विवादस्तेषु केवलम्।

नमोऽस्तुरामाय



नमोऽस्तुरामाय

ISSN 2249-751X

प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं
चन्द्राकौ यत्रसाक्षिणौ ॥

दृक्सिद्ध निरयन भारतीय

श्री राघवेन्द्र पञ्चाङ्गम्

सन् 2026-27 ई.

* विक्रम संवत् 2083 * शक संवत् 1948 * जयहिंद संवत् 79-80

राजा
गुरु

मन्त्री
मंगल



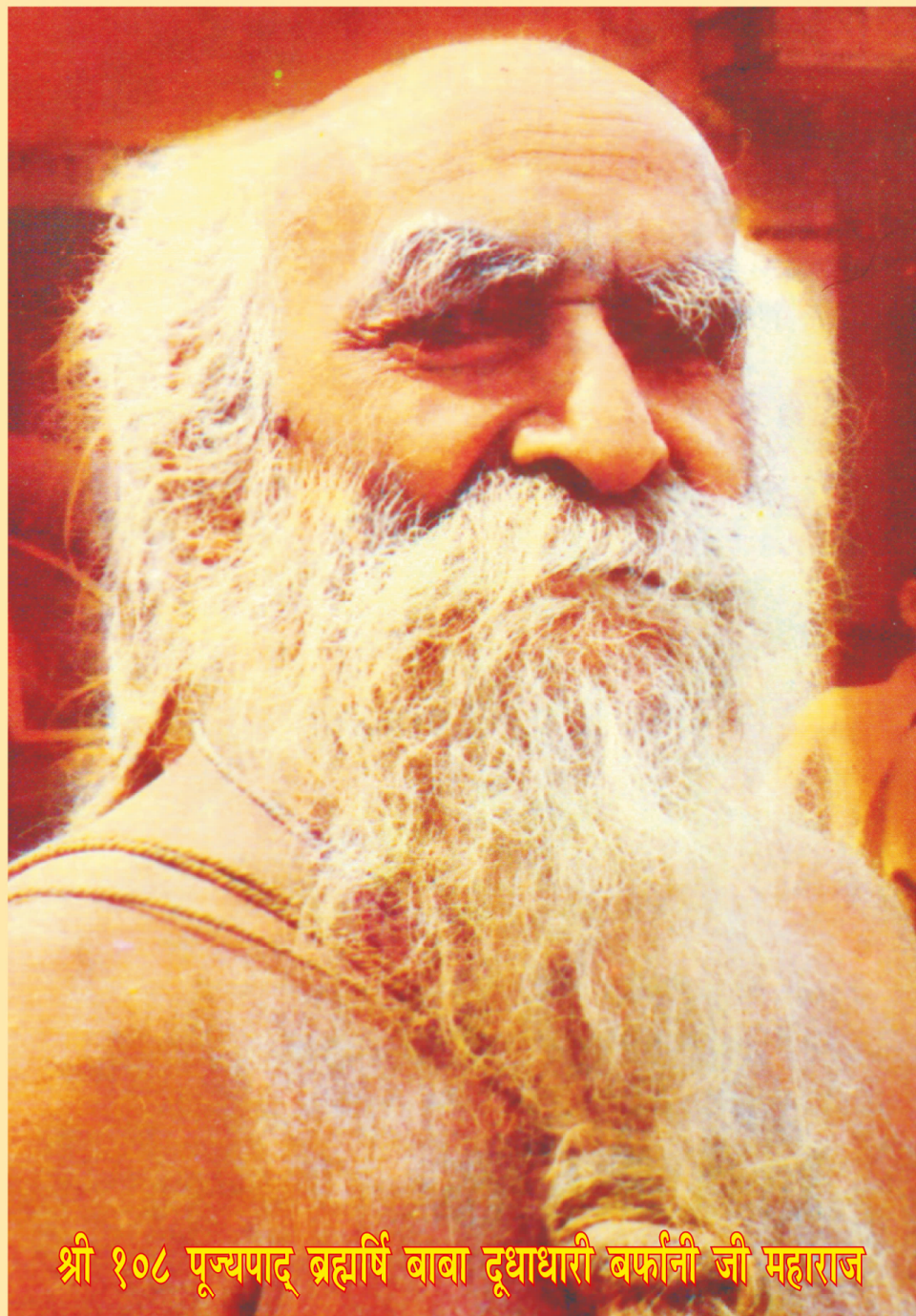
दैवज्ञ भूषण
पं० रामेश्वर दत्त रैणा
राज ज्योतिषी



डॉ० चन्द्रमौलि रैणा
फलित एवं सिद्धान्तज्योतिषाचार्य, विद्यावारिधि (Ph.D.)
सहाचार्य (सेवानिवृत्त) ज्योतिष विभाग
केन्द्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय
श्री रणवीर परिसर, कोट भलवाल, जम्मू (जम्मू कश्मीर)

तुलसी विवाह पद्धति सहित

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः॥



श्री १०८ पूज्यपाद् ब्रह्मर्षि बाबा दूधाधारी बर्फानी जी महाराज



सन्तशिरोमणि सन्तश्री प्रभुदास जी

“ब्रह्मर्षि बाबादूधाधारी महात्मनां प्रशस्तिः॥”

श्री १०८ श्री ब्रह्मर्षिदूधाधारी प्रशस्तिः

दुग्धाधारी यतिवर प्रभुर्वैष्णवानन्दकारी
वेदोद्धारि प्रतिपदमहो विश्वतो यज्ञकारी।
सिद्धाचारी स शणवसनो बाल्यतो ब्रह्मचारी
ब्रह्मनन्दं जनयति हृदि स्मर्तुरुद्धारकारी॥१॥

नाम्नां धाम्नामुपधविरहेणाऽऽत्मसिद्धौ प्रसिद्धाः
पुण्यात्मानो द्विजसुरगवां सर्वदेवावधानाः।
यज्ञैरिष्ट्वा जनगणमनोहारि पर्जन्यहेते।
धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातं दधानाः॥२॥

दुग्धाधारिमहात्मनां द्विजकुले जातं शतं जन्मना-
मित्थं मे प्रतिभाति सन्मुखधिया यज्ञव्रताभ्यासतः।
नानातीर्थनिषेवणाद्गुरुकृपामासाद्यगोपालनाद्
देवानां सततार्चनात्पङ्कजपदपङ्कजगोपाजनात्॥३॥

वेदानां श्रवणाज्जगद्गुरुमुखान्मौनव्रतालम्बयाम्
सच्छास्त्राचरणात्पुराण श्रवणात्पित्रर्चनान्निवेशः।
गायत्र्याविधिवज्जपन्द्विजमुखान्निर्गुणं पूज्यर्चयाम्
श्रीतस्मार्तमखैः सदेह जगतः कर्तव्यं सञ्चिन्तनात्॥४॥

ब्रह्मर्षिप्रवरा जगद्गुरुवराः सृष्ट्वैकं दृष्ट्या जगत्
ह्रस्वाक्षं जितवन्त इत्युक्तं ते जाताः सहस्राध्वराः।
नानातीर्थवनादिषु हिमजलाशय्यास्तपश्चरयाम्
कृत्वाऽऽत्मानमतीव निर्मलमहो जगतां हिताय स्वयम्॥५॥

उड्डाङ्गासमवङ्ग मागधरवसाऽऽसाकेत काशी गया
जम्बू श्रीनगर सदूधमपुराम्बाराम आर्यश्रियम्।
राजौरी ह्यखनूर मानससरो जन्द्राह भड्डगुढा
गङ्गायामुनसङ्गमं हरिहरद्वारोज्जयिन्याह्वयम्॥६॥

क्षेत्रं नैमिषिकं समेत्य वदरीक्षेत्रं कुरूणां वरम्
गामं गामहो सदर्षिप्रवराश्चान्त्ये स्मरन्तः प्रभुम्
न्यास्थञ्छ्री प्रभुदास वैष्णव कृते सत्कार्यभारं महत्
भारश्री वहतां सतां प्रभुवरा जीवन्तु कल्पावधिम्॥७॥

इति विहारिलाल वाशिष्ठ प्रणीता
श्री १०८ श्रीब्रह्मर्षिदूधाधारिमहात्मनां
॥ प्रशस्तिः समाप्ता ॥

॥ नमोऽस्तु रामाय ॥

श्रीदूधाधारी बर्फानी आश्रम

भूपतवाला, हरिद्वार-२४९४१०

परमाध्यक्ष— सन्तश्री प्रभुदासजी महाराज

दिनाङ्क - ०५/१०/२००३

शुभाशंसा

ज्योतिष शास्त्र में हमारे ऋषियों का अनुसन्धान चमत्कृत होता है। गणित, फलित सिद्धान्त आदि वर्गों में विभक्त इस शास्त्र की वैज्ञानिकता हमारे ही देश में नहीं, बल्कि दुनियाभर के लोग स्वीकार करते हैं। उसी प्रक्रिया में पञ्चाङ्गविधा को गणितीय आधार पर तैयार किया जाता है। लौकिक व्यवहारोपयोगी, दैनिक कृत्यों में सहयोगी यह पञ्चाङ्ग परिपाटी हमारे देश में बहुत ही लोकप्रिय है। इस परम्परा के पालन में विद्वान् ज्योतिषी डॉ० चन्द्रमौलि रैणा श्रीराघवेन्द्र-पञ्चाङ्ग का प्रकाशन बड़े ही श्रम और लगन के साथ कर रहे हैं। वास्तव में इस विधा को आगे बढ़ाने से ऋषि ऋण का शोधन होता है। इनके पिता पं० श्री रामेश्वरदत्त जी रैणा एक ख्यातिप्राप्त राजपण्डित थे। अपने पितृचरण की कीर्तिशृङ्खला में श्री रैणा का यह कृत्य श्लाघनीय है। मैं श्रीराघवेन्द्र-पञ्चाङ्ग की सफलता हेतु अपनी शुभकामना व्यक्त करते हुए श्री चन्द्रमौलि रैणा के कल्याण हेतु आशीर्वाद प्रदान करता हूँ। शुभमस्तु।

श्रीसीतारामचरणानुरागी

प्रभुदास
(सन्त प्रभुदास)

पञ्चांग देखने की विधि

‘श्रीराघवेन्द्र पञ्चाङ्गम्’ का सभी गणित जम्मू के अक्षांश 32:44 रेखांश 74:54 पर किया गया है। तिथि नक्षत्र के घटी पल जम्मू के स्पष्ट सूर्योदय से समाप्ति काल के हैं। तिथि नक्षत्र योग करण के घण्टा मिनट भा.स्टै.टा. से समाप्ति काल के हैं, जो भारत में सर्वत्र उसी टाइम से होंगे।

सूर्योदय सूर्यास्त भारतीय समयानुसार जम्मू के हैं। सूर्योदय सूर्यास्त किरण वक्री भवन संस्कार रहित है। प्रत्यक्ष देखने के लिए सूर्योदय में दो मिनट घटायेँ और सूर्यास्त में दो मिनट बढ़ायेँ।

इस पंचांग में करण सूर्योदय कालीन दिये गये हैं। अग्रिम करण उससे आगे वर्तमान तिथि के अर्धभाग तक जानें।

सूर्य चन्द्रादि ग्रहों का राश्यादि संचार एवं भद्रा पंचक, ग्रहों के उदय अस्त वक्रमार्गी आदि भा.स्टै.टा. में हैं, जो भारत में सर्वत्र उसी टाइम में होंगे। यह इस पंचांग की विशेषता है।

पक्षों में अष्टमी, पूर्णिमा एवं अमावस्या के ग्रह स्पष्टों के राश्यादि स्टै.टा. प्रातः घं. 5 मि. 30 के हैं। नीचे उस दिन की गति और वक्री मार्गी उदय-अस्त व ग्रहों के नक्षत्रचरण दिये हैं। ग्रह स्पष्टों के साथ कुण्डली भी सूर्योदय समय की है।

तिथ्यादि तथा चन्द्रमा भद्रा पंचांग आदि में 24-25-26 आदि अंक लिखे हैं, उनका अर्थ यह है कि 24 को रात्रि के बारह बजे, 25 को रात्रि के 1 बजे, 26 को रात्रि के 2 बजे समझें। इस प्रकार आगे के अंकों में भी 24 घटाकर अर्द्धरात्रि बाद के अगली तारीख में समझेंगे।

इस पंचांग का गणित आचार्यों, ऋषियों द्वारा ग्राह्य और भारत सरकार द्वारा स्वीकृत सूक्ष्म दृश्य पद्धति से किया है। जहां सायन गणना की गयी है, वहाँ अयनांश चित्रा पक्षीय शुद्ध मानकर ग्रहण किये गये हैं। यहाँ निरयन पद्धति सर्वत्र मान्य की है।

दैनिक लग्न सारिणी में समय का उल्लेख स्टैण्डर्ड टाइम के अनुसार जम्मू का है और लग्न का समाप्ति काल लिखा गया है।

लस्टर में ABC... आदि चिह्न कहीं दूसरी लाइन में लगाकर शेष मैटर लिखा है।

‘श्री राघवेन्द्र पञ्चाङ्ग’ ज्योतिष कार्यालय के नियम

हमारे ज्योतिष कार्यालय में जन्मपत्रिका, वर्षफल शुद्ध गणित से कम्प्यूटर की सहायता से बनाये जाते हैं विद्या में सफलता, व्यवसाय सम्बंधी प्रश्न, विवाह, सन्तान, विदेश यात्रा, पारिवारिक सुख, इत्यादि महत्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर ग्रहों के आधार पर शास्त्रीय विधिविधान से अनुशीलन करके दिये जाते हैं।

संक्षिप्त जन्मपत्रिका – अपना भविष्य जानने के लिए जन्म तारीख, जन्म समय, जन्म स्थान, पिता, दादा का नाम, गोत्र जाति इत्यादि भेजें या स्वयं आकर लिखवायें। फीस 1000 रुपये होगी, विदेश में उत्पन्न जातक की पत्रिका के लिए 1500 रुपये देय होंगे।

सम्पूर्ण वृहद् जन्मपत्री – आपके जीवन में होने वाली महत्वपूर्ण घटनाओं, नौकरी, व्यवसाय, शिक्षा विवाहादि के सन्दर्भ में विस्तृत विवरण दिया जाता है। वृहद् जन्मपत्री की फीस 2500 से 3100 रुपये तक होगी।

वर्षफल – आपका वर्ष कैसा बीतेगा इसके लिए जन्मपत्रिका की फोटो कापी भेजना आवश्यक है। यदि जन्मपत्री नहीं है तो पत्र लिखने का समय, तारीख, स्थान तथा अपनी पारिवारिक व कारोबारी समस्या स्पष्ट लिखते हुए मनपसन्द फूल का नाम लिखें। फलादेश की फीस 1000 से 1500 रुपये तक होगी। कृपया पूर्ण राशि अग्रिम भेजें।

कर्मकाण्ड सम्बंधी – हमारे यहाँ उच्चकोटि के कर्मकाण्डी विद्वान् हैं विवाह, पूजा, जप, अनुष्ठानादि के लिए पर्याप्त व्यवस्था है। ग्रहों के शान्त्यर्थ, समस्त समाधान हेतु शास्त्रीय विधिविधान से अनुष्ठान करवाये जाते हैं।

डॉ० चन्द्रमौलि रैणा सहाचार्य (सेवानिवृत्त) ज्योतिष जी से प्रत्यक्ष मिलने के लिए आने वाले सज्जन फोन द्वारा पूर्व ही समय निर्धारित कर लें।

संचालक

श्रीराघवेन्द्र ज्योतिष संस्थान, 44/2 त्रिकुटा नगर जम्मू

दूरभाष एवं फैक्स : 0191-3555681,

मोबाईल : 094191-94230, 6005569931

ई-मेल : drcmraina@gmail.com

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि
विवादस्तेषु केवलम्।

नमोऽस्तुरामाय



नमोऽस्तुरामाय

ISSN 2249-751X
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं
चन्द्राकौ यत्रसाक्षिणौ ॥

दृक्सिद्ध निरयन भारतीय

राजा
गुरु

श्री राघवेन्द्र पञ्चाङ्गम्

मन्त्री
मंगल

सन् 2026-27 ई.

* विक्रम संवत् 2083 * शक संवत् 1948 * जयहिंद संवत् 79-80

सलाहकार समिति :

श्रीमती कमलेश रैणा

शास्त्री, बी०एड०

डॉ० शिव प्रसाद रैणा

फलित ज्योतिषाचार्य,
विद्यावारिधि (Ph.D)

पं० रविन्द्र रैणा

ज्योतिष विशारद

डॉ० अव्यक्त रैणा

सिद्धान्त-फलित ज्योतिषाचार्य

विद्यावारिधि (Ph.D) वास्तुशास्त्र विशेषज्ञ

डॉ० रामदास शर्मा

फलित ज्योतिषाचार्य,
विद्यावारिधि (Ph.D)

सहाचार्य ज्योतिष

पं० विनय शास्त्री

ज्योतिष शास्त्री

श्री शुभाङ्ग रैणा

पुष्पक सम्पादक :

डॉ० चन्द्रमौलि रैणा

फलित एवं सिद्धान्तज्योतिषाचार्य, विद्यावारिधि (Ph.D.)

सहाचार्य (सेवानिवृत्त) ज्योतिष विभाग

केन्द्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय

श्री रणवीर परिसर, कोट भलवाल, जम्मू (जम्मू कश्मीर)

सह-सम्पादक :

पं० पीयूष रैणा

ज्योतिर्विद,

अभियन्ता एवं तकनीकी विज्ञ

विविध सम्मान प्राप्त

श्री राघवेन्द्र ज्योतिष संस्थान, जम्मू

डॉ० के०एस० चाडक

एम.एस., ज्योतिष विशारद

सत्प्रेरका :

महामहिमोपाध्याय प्रो० रामचन्द्र पाण्डेय

भू.पू. ज्योतिष विभागाध्यक्ष

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ.प्र.)

स्व० प्रो० शुकदेव चतुर्वेदी

भू.पू. निदेशिक ज्योतिष पाठ्यक्रम

श्रीलालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ,

नई दिल्ली-16

स्व० डॉ० विहारीलाल वसिष्ठ

भू.पू. अध्यक्ष ज्योतिष विभाग

केन्द्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय

श्री रणवीर परिसर, जम्मू

पञ्चाङ्ग सज्जा विशेषज्ञ :

राजिन्द्र सौगुणियाँ

श्रीराघवेन्द्र ज्योतिष संस्थान ट्रस्ट (पञ्जीकृत)

प्रकाशन वर्ष : षड्विंशतिः

44/2 त्रिकुटा नगर जम्मू, दूरभाष : 0191-3555681, मोबाईल : 09419194230, 6005569931

ई-मेल : drcmraina@gmail.com

www.drcmraina.com

मूल्य : 175.00 रुपये

प्रकाशक : मल्होत्रा ब्रदर्स, पक्का डंगा जम्मू

दूरभाष : 94191-83231

All disputes within Jammu Jurisdiction of Courts.

© All rights reserved

विषय सूची

क्रमाङ्क	विषय	पृष्ठ संख्या	क्रमाङ्क	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	प्रमुख व्रत पर्व त्योहार एवं अवकाश	6	29.	आर्द्राप्रवेश लग्न	44
2.	भारत सरकार द्वारा अनुमोदित छुट्टियाँ	11	30.	व्रत परिचय, शनिगोचर, केतु गोचर, राहु गोचर	45
3.	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत	11	31.	चन्द्रदर्शन का व्यापार पर प्रभाव	69
4.	गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल	12	32.	बारह राशियों का मासगत वार्षिक फलादेश	71
5.	गण्डमूल विचार	12	33.	ग्रहण विवरण	99
6.	पञ्चक विचार	12	34.	तुलसी विवाह पद्धति	103-137
7.	एकादशी व्रत	13	(1)	शांतिपाठः	105
8.	श्रीसत्यनारायण व्रत	13	(2)	आत्मपूजा	106
9.	अमावस्याएँ	13	(3)	संकल्पः	108
10.	प्रदोष व्रत	14	(4)	स्वस्तिवाचनम्	109
11.	पितृ पक्ष में श्राद्ध	14	(5)	श्रीगौरीगणेशपूजा	110
12.	दशमहाविद्या जयन्ती	14	(6)	श्रीगणपत्यथर्वशीर्षम्	112
13.	जैन व्रत त्योहार	15	(7)	आचार्य वरण का संकल्प	113
14.	जयंतियाँ	17	(8)	पञ्चोकार पूजनम्	113
15.	दशावतार जयन्तियाँ	18	(9)	षोडशमातृकापूजनम्	114
16.	श्री कुलदेव बाबा कैलख देव जी उद्दर जम्मू के स्थायी कार्यक्रम	18	(10)	सप्तमातृकापूजनम्	114
17.	मुस्लिम त्योहार	18	(11)	यज्ञमालापूजनम्	114
18.	क्रिश्चियन त्योहार	18	(12)	ईशान कलशपूजनम्	115
19.	राहु काल वर्ण	18	(13)	चार वेदों का पूजन	116
20.	निरयण संक्रान्तियाँ	19	(14)	वेदीनिर्माण तथा अग्निस्थापनम्	117
21.	गुरु-पर्व दश गुरु साहिबान	19	(15)	नवग्रहपूजनम्	117
22.	श्रीकुलदेव रैणा विरादरी सूज्जवाँ जम्मू के स्थायी कार्यक्रम	19	(16)	अधिदेवता स्थापनम्	117
23.	सूर्यादि ग्रहों का राशि प्रवेश वक्रा-मार्गी एवं उदयास्त घण्टा मिनटों में	20	(17)	प्रत्याधिदेवता स्थापनम्	118
24.	ग्रहों का उदयास्त	25	(18)	लोकपालानां स्थापनम्	118
25.	सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, गुरु पुष्य आदि योग	26	(19)	इन्द्रादि दशदिक्पालानां स्थापनम्	118
26.	चन्द्रमा का नक्षत्र चरण प्रवेश वर्ष सन् 2026-27 ई.	30	(20)	क्षमापनम्	120
27.	राजा-मन्त्री आदि का विवरण	42	(21)	सर्वतोभद्रमण्डलपूजनम्	120
28.	'रौद्र' नामक संवत्सर का फल	42	(22)	श्रीमन्नारायणपूजनम्	120

क्रमाङ्क	विषय	पृष्ठ संख्या	क्रमाङ्क	विषय	पृष्ठ संख्या
(23)	तुलसीपूजनम्	124	50.	नया-पुराना वाहन क्रय मुहूर्त	216
(24)	तुलसी नमस्कारम्	127	51.	विपिणि मुहूर्त	217
(25)	वरपूजनम्	128	52.	यज्ञोपवीत मुहूर्त	218
(26)	तुलसी दान संकल्पः	130	53.	सर्वदेवप्रतिष्ठा मुहूर्त	219
(27)	हवन विधान	131	54.	रामायण आदि कथा तथा चुनाव में खड़े होने के मुहूर्त	220
(28)	नवाहुति होमः	131	55.	वैदिक फलित ज्योतिष एवं वैवाहिक मिलान में नवताराओं एवं तारा मैत्री का महत्त्व (तारा बल)	221
(29)	राष्ट्रभृद्धोमः	132	56.	गुण मिलान सारिणी	231
(30)	जया होमः	133	57.	जन्माक्षर चक्र	239
(31)	अथाभ्यातान होमः	133	58.	नक्षत्रयोग कष्टावली	241
(32)	वैदिकअभिषेकः	136	59.	मुहूर्त ग्रन्थों के अनुसार आवश्यक मुहूर्त कोष्टक	243
(33)	पौराणिक अभिषेकः	136	60.	अष्टकूट मिलान से विचारणीय विषय	246
(34)	विसर्जनम्	136	61.	विवाह संस्कार	250
(35)	श्रीसूर्यार्घ्यदानम्	137	62.	यात्रा मुहूर्त का विचार	255
(36)	भगवान् का स्मरण एवं प्रार्थना	137	63.	जातक की आजीविका विचार	261
35.	आँवले और विल्व के वृक्ष का महातम्य	138	64.	युति दोष परिहार	263
36.	पञ्चाङ्ग विवरण सन् 2026-27 ई.	139-164	65.	विवाह में गोचर से त्रिबल शुद्धि परिहार	267
37.	तिथ्यादि पञ्चाङ्ग (भास्कर टाईम) सन् 2026-27 ई.	165-177	66.	नवग्रहों के रत्न एवं धारण विधि	269
38.	चन्द्रोदयास्त सन् 2026-27 ई.	178	67.	मूल नक्षत्रों के वेदोक्त मन्त्र	272
39.	पञ्चाङ्ग विवरण का शेष भाग	180-181	68.	पंचक नक्षत्रों के वेदोक्त मन्त्र	272
40.	21 अक्टूबर 2025 को दिवाली मनाना ही पूर्णता शास्त्र सम्मत एवं परम कल्याणकारी	182	69.	गोधूली लग्न	273
41.	दैनिक ग्रह स्पष्ट	183-195	70.	नवग्रहों का नैसर्गिक मैत्री चक्र	274
42.	होम में अग्निवास विचार	196	71.	पञ्चाङ्ग का स्वरूप	275
43.	शुभ विवाह मुहूर्त	197	72.	पञ्चक विचार	282
44.	विवाह मुहूर्त विवेचन सन् 2026-27 ई.	205	73.	दैनिक लग्न सारिणी (जम्भू)	289
45.	अथ त्रिबलशुद्धि कोष्टक सम्वत् 2083 (सन् 2026 - 2027 ई० तक)	207	74.	ग्रहों के दान, दान समय, जन-संख्या, जपनीय-मन्त्र एवं हवनसमिधा ज्ञानार्थ-चक्र	301
46.	मुण्डन मुहूर्त	213	75.	स्वप्न विचार	301
47.	शिलान्यास मुहूर्त	213	76.	कर्ज से मुक्ति पाने के लिए श्रीगणेशमन्त्र विधान	303
48.	नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त	214	77.	ऋणहर्तृ गणेशस्तोत्रम्	303
49.	जीर्ण (पुरातन) गृह प्रवेश मुहूर्त	214			

प्रमुख व्रत, पर्व, त्योहार एवं अवकाश (सन् 2026-27 ई०)

जनवरी सन् 2026 ई.		फरवरी		मार्च		अप्रैल	
प्रदोष व्रत	1 जनवरी गुरु	श्रीगुरुविदास जयन्ती, पूर्णिमा व्रत	1 फरवरी रवि	प्रदोष व्रत	1 मार्च रवि	मासिक शिवरात्रि व्रत	17 मार्च मंगल
श्रीसत्यनारायण व्रत	2 जनवरी शुक्र	श्रीसत्यनारायण व्रत	1 फरवरी रवि	होलिका दहन, श्रीसत्यनारायण व्रत	2 मार्च सोम	पितृकार्येऽमावस	18 मार्च बुध
पूर्णिमा व्रत, माघस्नानारम्भः	3 जनवरी शनि	फाल्गुन कृष्ण प्रतिपदा	2 फरवरी सोम	पूर्णिमा व्रत, चन्द्रग्रहण (भारत में अदृश्य)	3 मार्च मंगल	देवकार्येऽमावस, नवरात्र प्रारम्भ	19 मार्च गुरु
माघ कृष्ण प्रतिपदा	4 जनवरी रवि	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, चंद्रोदय 21:44 जम्मू	5 फरवरी गुरु	चैत्र कृष्ण प्रतिपदा	4 मार्च बुध	घटस्थापनम्, विक्रमी संवत् 2082 सम्पूर्णम्	19 मार्च गुरु
श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी	6 जनवरी मंगल	फाल्गुन संक्रान्ति	12 फरवरी गुरु	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, चंद्रोदय 21:25 जम्मू	6 मार्च शुक्र	पञ्चक समाप्ति: 2627, स.सि.योग	20 मार्च शुक्र
भुग्गा व्रत, चन्द्रोदय 21:00	6 जनवरी मंगल	विजया एकादशी व्रत	13 फरवरी शुक्र	शीतला पूजनम्	10 मार्च मंगल	मत्स्योत्पत्तिः, गणगौरी पूजा	21 मार्च शनि
स्वामी विवेकानन्द जयन्ती	10 जनवरी शनि	शनि प्रदोष व्रत	14 फरवरी शनि	चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च शनि	सौभाग्य शयनव्रत	21 मार्च शनि
पुण्यतिथि पं. रामेश्वर दत्त रैणा	13 जनवरी मंगल	महाशिवरात्रि व्रत	15 फरवरी रवि	पापमोचिनी एकादशी व्रत	15 मार्च रवि	भारतीय चैत्रारम्भ	22 मार्च रवि
राजज्योतिषी, अखनूर		पञ्चक प्रारम्भ 9:05, देवपितृकार्येऽमावस	17 फरवरी मंगल	सोम प्रदोष व्रत, पञ्चक प्रारंभ 18:13	16 मार्च सोम	श्रीलक्ष्मी पञ्चमी, स.सि.योग	23 मार्च सोम
माघ संक्रान्ति, मकर संक्रान्ति पर्व	14 जनवरी बुध	सूर्यग्रहण (भारत में अदृश्य)	17 फरवरी मंगल	सोम प्रदोष व्रत, पञ्चक प्रारंभ 18:13	16 मार्च सोम	स्कन्दषष्ठी व्रत, द्विपुष्कर योग	24 मार्च मंगल
षट्तिला एकादशी व्रत	14 जनवरी बुध	फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा	18 फरवरी बुध			स.सि.योग	25 मार्च बुध
तिल द्वादशी	15 जनवरी गुरु	श्रीरामकृष्ण परमहंस जयन्ती	19 फरवरी गुरु			श्रीदुर्गाष्टमी, श्रीराम नवमी	26 मार्च गुरु
प्रदोष व्रत, मासिक शिवरात्रि व्रत	16 जनवरी शुक्र	भा. फाल्गुन प्रारम्भ	20 फरवरी शुक्र			अन्नपूर्णा पूजनम्	26 मार्च गुरु
मेरू त्रयोदशी (जैन)	15 जनवरी शुक्र	पञ्चक समाप्त 19:07	21 फरवरी शनि			श्रीदुर्गानवमी, नवरात्र समाप्त, उदया नवमी	27 मार्च शुक्र
देवपितृकार्येऽमावस, मौनी अमावस	18 जनवरी रवि	ऋषि याज्ञवल्क्य जयन्ती	22 फरवरी रवि			गण्डमूल शुरू 14:50, व्रतबन्धदशमी	28 मार्च शनि
माघ शुक्ल प्रतिपदा, श्रीवल्लभ जयन्ती	19 जनवरी सोम	होलाष्टक प्रारम्भ	24 फरवरी मंगल			कामदा एकादशी व्रत	29 मार्च रवि
पञ्चक प्रारम्भ 25:34	20 जनवरी मंगल	आमलकी एकादशी	27 फरवरी शुक्र			लक्ष्मीकान्तदोलोत्सवः, गण्डमूल	29 मार्च रवि
श्री गौरी तृतीया, भा.माघारम्भः	21 जनवरी बुध					सोमप्रदोष व्रत, अनंग त्रयोदशी	30 मार्च सोम
वरद चतुर्थी, तिल चतुर्थी	22 जनवरी गुरु					महावीर जयन्ती (जैन)	31 मार्च मंगल
वसन्त पञ्चमी, नेताजी जयन्ती	23 जनवरी शुक्र						
पञ्चक समाप्त 13:36, पुत्र सप्तमी	25 जनवरी रवि						
विजया सप्तमी, मर्यादा महोत्सव (जैन)	25 जनवरी रवि						
श्रीभीष्माष्टमी, गणराज्य दिवस	26 जनवरी सोम						
जया एकादशी व्रत, श्री भीष्म द्वादशी	29 जनवरी गुरु						
प्रदोष व्रत	30 जनवरी शुक्र						
श्री गुरुहरराय जयन्ती	31 जनवरी शनि						

पञ्चक प्रारम्भ 27:44	12 अप्रैल रवि	श्रीनारद जयंती, वीणादानम्	3 मई रवि	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चंद्रोदय जम्मु 22:06	3 जून बुध
वरुथिनी एकादशी व्रत	13 अप्रैल सोम	त्रिपुष्कर योग 5:46 से 7:09 तक	3 मई रवि	पञ्चक प्रारम्भ 19:03, सं.सि.योग	6 जून शनि
श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती	13 अप्रैल सोम	गण्डमूल प्रारम्भ 9:57, सं.सि.योग	4 मई सोम	द्विपुष्कर योग 5:26 से 7:55 तक	7 जून रवि
वैशाख संक्रान्ति, मेला वैशाखी	14 अप्रैल मंगल	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चंद्रोदय 22:36	5 मई मंगल	सं.सि.योग 9:40 से	9 जून मंगल
प्रदोष व्रत, मासिक शिवरात्रि व्रत	15 अप्रैल बुध	अंगारकी चतुर्थी, गण्डमूल	5 मई मंगल	गण्डमूल शुरू 9:21	10 जून बुध
गण्डमूल प्रारम्भ 13:58	16 अप्रैल गुरु	श्री टैगौर जयन्ती	7 मई गुरु	कमला एकादशी व्रत, पुरुषोत्तमा एकादशी	11 जून गुरु
पञ्चम समाप्ति 12:02	17 अप्रैल शुक्र	सं.सि.योग	9 मई शनि	पञ्चक समाप्ति 8:16	11 जून गुरु
देवपितृकार्येऽमावस, गण्डमूल	17 अप्रैल शुक्र	पञ्चक प्रारम्भ 12:12	10 मई रवि	प्रदोष व्रत, गण्डमूल समाप्त 6:28	12 जून शुक्र
श्रीगुरु अंगद देव जयन्ती	18 अप्रैल शनि	अपरा एकादशी व्रत, गण्डमूल शुरू 24:17	13 मई बुध	मासिक शिवरात्रि व्रत	13 जून शनि
अगस्तास्त, गण्डमूल समाप्त 9:42	18 अप्रैल शनि	मेला भद्रकाली (कपूरथला पञ्जाब)	13 मई बुध	पितृकार्येऽमावस	14 जून रवि
श्रीपरशुराम जयन्ती, शिवाजी जयन्ती	19 अप्रैल रवि	प्रदोष व्रत, पञ्चक समाप्ति: 22:33, गण्डमूल	14 मई गुरु	देवकार्येऽमावस, सोमवती अमावस	15 जून सोम
अक्षय तृतीया, सं.सि.योग	20 अप्रैल सोम	ज्येष्ठ संक्रान्ति, मासिक शिवरात्रि व्रत	15 मई शुक्र	आषाढ संक्रान्ति, सूर्य मिथुन में 12:51	15 जून सोम
सायन सूर्य वृष में 6:48, ग्रीष्म ऋतु प्रा.	20 अप्रैल सोम	गण्डमूल समाप्त 20:14	15 मई शुक्र	अधिक मास पूर्ति:, सं.सि.योग	15 जून सोम
श्री शंकराचार्य जयन्ती	21 अप्रैल मंगल	शनैश्चर जयन्ती, देवापितृकार्येऽमावस	16 मई शनि	त्रिपुष्कर योग 16:12 से 24:52 तक	16 जून मंगल
भा० वैशाख प्रारंभ	21 अप्रैल मंगल	मरुत्युन वटपूजनम्, वटसावित्री व्रत	16 मई शनि	रम्भातृतीया, महाराणाप्रताप जयन्ती	17 जून बुध
श्रीरामानुज जयन्ती	22 अप्रैल बुध	अधिक मास प्रारम्भ, पुरुषोत्तम मास	17 मई रवि	गण्डमूल शुरू 11:32, सं.सि.योग	18 जून गुरु
श्रीगंगोत्पत्ति: कमलसप्तमी, सं.सि.योग	23 अप्रैल गुरु	(17 मई से 15 जून तक अधिक मास)		गुरु पुष्य योग 11:32 तक	18 जून गुरु
गण्डमूल प्रारम्भ 20:14	24 अप्रैल शुक्र	सं.सि.योग	18 मई सोम	गण्डमूल समाप्त 9:25, अराण्य षष्ठी	20 जून शनि
श्री बगलामुखी जयन्ती	24 अप्रैल शुक्र	गण्डमूल प्रारंभ 26:49	21 मई गुरु	सायनसूर्य कर्क में 13:46	21 जून रवि
श्रीजानकी जयन्ती, गण्डमूल	25 अप्रैल शनि	गुरु पुष्ययोग 5:32 से, सं.सि.योग	21 मई गुरु	दक्षिणायन प्रारंभ, वर्षा ऋतु प्रारंभ	21 जून रवि
गण्डमूल समाप्त 20:27	26 अप्रैल रवि	सायन सूर्य मिथुन में 6:50	21 मई गुरु	श्रीदुर्गाष्टमी, धूमावती जयन्ती	22 जून सोम
मोहिनी एकादशी व्रत	27 अप्रैल सोम	भारतीय ज्येष्ठ मास प्रारंभ, गण्डमूल	22 मई शुक्र	भारतीय आषाढ आरंभ, शिवपूजा व्रत	22 जून सोम
भौम प्रदोष व्रत, मधुसूदन द्वादशी	28 अप्रैल मंगल	गण्डमूल समाप्त 26:09	23 मई शनि	श्रीगंगा दशहरा (मतान्तरे)	24 जून बुध
त्रिपुष्करयोग 5:50 से	28 अप्रैल मंगल	श्री गंगा दशहरा	25 मई सोम	निर्जला एकादशी व्रत	25 जून गुरु
कामदेव व्रत, सं.सि.योग	29 अप्रैल बुध	कमला एकादशी, पुरुषोत्तमा एकादशी	27 मई बुध	शनि प्रदोष व्रत, गण्डमूल प्रारंभ 22:11	27 जून शनि
श्रीगुरु अमरदास जयन्ती, श्रीनृसिंह चतुर्दशी	30 अप्रैल गुरु	सं.सि.योग	27 मई बुध	व्रतसावित्री व्रत पूर्ण	27 जून शनि
छिन्नमस्तिका जयन्ती, ॐकारेश्वर यात्रा	30 अप्रैल गुरु	प्रदोष व्रत	28 मई गुरु	पूर्णिमा व्रत श्रीसत्यनारायण व्रत	29 जून सोम
		श्रीसत्यनारायण व्रत	20 मई शनि	संत कबीर जयन्ती, गण्डमूल समाप्त 28:03	29 जून सोम
		गण्डमूल प्रारंभ 16:11, पूर्णिमा व्रत	31 मई रवि		
				जुलाई	
मई		जून		श्रीगुरु हरगोविन्द जयन्ती	1 जुलाई बुध
श्री बुद्ध जयन्ती, श्री सत्यनारायण व्रत	1 मई शुक्र	गण्डमूल समाप्त 22:06	2 जून मंगल	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, चंद्रोदय जम्मु 22:00	3 जुलाई शुक्र
पूर्णिमा व्रत, कूर्मोत्पत्ति:, वैशाख स्नान पूर्ति:	1 मई शुक्र				
धर्मप्रीत्यर्थ जलकुम्भदान, महर्षिभृगु जयन्ती	1 मई शुक्र				

पंचक प्रारंभ 24:47, सं.सि.योग	3 जुलाई शुक्र	प्रथम श्रावण सोमवार व्रत	3 अगस्त सोम	श्रावण सोमवार व्रत	25 अगस्त सोम
गण्डमूल प्रारंभ 16:24, सं.सि.योग	7 जुलाई मंगल	गण्डमूल प्रारम्भ 22:00	3 अगस्त सोम	“भाद्रपदेदधिभक्षणत्यागः”	24 अगस्त सोम
पञ्चक समाप्त 16:00	8 जुलाई बुध	पञ्चक समाप्त 21:54	4 अगस्त मंगल	भौम प्रदोष व्रत	25 अगस्त मंगल
गण्डमूल 14:56 तक, सं.सि.योग	9 जुलाई गुरु	गण्डमूल समाप्त 21:18, शीतला सप्तमी	5 अगस्त बुध	श्रीसत्यनारायण व्रत	27 अगस्त गुरु
योगिनी एकादशी व्रत (स्मार्त)	10 जुलाई शुक्र	श्रीगुरु हरिक्रिशन जयंती	7 अगस्त शुक्र	पञ्चक प्रारम्भ 13:35, हयग्रीव जयंती	27 अगस्त गुरु
योगिनी एकादशी व्रत (वैष्णव)	11 जुलाई शनि	सं.सि.योग	8 अगस्त शनि	रक्षाबन्धन (रक्खड़ी) पूरा दिन शुद्ध है	28 अगस्त शुक्र
सं.सि.योग, त्रिपुष्कर योग 5:35 से 11:03	11 जुलाई शनि	कामिका एकादशी व्रत	9 अगस्त रवि	पूर्णिमा व्रत, संस्कृत दिवस	28 अगस्त शुक्र
प्रदोष व्रत, मासिक शिवरात्रि व्रत	12 जुलाई रवि	द्विपुष्कर योग 11:05 से 14:43 तक	9 अगस्त रवि	दर्शन श्री अमरनाथ गुफा	28 अगस्त शुक्र
सं.सि.योग	13 जुलाई सोम	सोम प्रदोष व्रत, श्रावण सोमवार व्रत	10 अगस्त सोम	त्रिपुष्कर योग 9:57 से 27:42 तक	29 अगस्त शनि
देवपितृकार्येऽमावस	14 जुलाई मंगल	वृहस्पति उदय पूर्व में 6:02	10 अगस्त सोम	गण्डमूल प्रारम्भ 27:44, सं.सि.योग	30 अगस्त रवि
वृहस्पति अस्त पश्चिम में 21:17	14 जुलाई मंगल	मासिक शिवरात्रि व्रत	11 अगस्त मंगल	संकष्ट चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 20:46	31 अगस्त सोम
गुप्तनवरात्रे प्रारम्भ, गण्डमूल प्रा. 21:46	15 जुलाई बुध	हरियाली अमावस, देवपितृकार्येऽमावस,	12 अगस्त बुध	पञ्चक समाप्त 27:23, गण्डमूल	31 अगस्त सोम
रथ यात्रा जगन्नाथपुरी	16 जुलाई गुरु	गण्डमूल प्रारंभ 7:09	12 अगस्त बुध	सितम्बर	
श्रावण संक्रांति, सूर्य कर्क राशि में 23:38	16 जुलाई गुरु	मेला चिन्तपूर्णा, चामुण्डा देवी (हि.प्र.)	13 अगस्त गुरु	गण्डमूल समाप्त 26:42, सं.सि.योग	1 सितम्बर मंगल
निरयन दक्षिणायन शुरू	16 जुलाई गुरु	मधुब्रग तृतीया, हरियाली तीज	15 अगस्त शनिवार	चन्द्रषष्ठी, हलषष्ठी	2 सितम्बर बुध
गण्डमूल समाप्त 18:34	17 जुलाई शुक्र	चतुर्विंशती दिवस	15 अगस्त शनि	शीतला व्रत, पुत्र सप्तमी व्रत	3 सितम्बर गुरु
स्कन्दषष्ठी व्रत, सं.सि.योग	19 जुलाई रवि	बरद चतुर्थी, दूर्वागणपति व्रत	16 अगस्त रवि	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (व्रत सबका)	4 सितम्बर शुक्र
भङ्गली नवमी, गुप्त नवरात्रे समाप्त	22 जुलाई बुध	शुभ जन्मदिनोत्सव सन्त श्री प्रभुदास जी	16 अगस्त रवि	गुग्गा नवमी, नन्दोत्सव	5 सितम्बर शनि
भारतीय श्रावण प्रारम्भ	23 जुलाई गुरु	(हरिद्वार)		मेल रैणा बिरादरी सूज्जवां जम्मू	5 सितम्बर शनि
मन्वादि आशादशमी, गण्डमूल प्रा. 24:36	24 जुलाई शुक्र	नापञ्चमी, सोमेश्वरपूजनम्, भाद्रपद संक्रांति	17 अगस्त सोम	अजा एकादशी व्रत, जैन पर्युषण	7 सितम्बर सोम
देवशयनी एकादशी व्रत	25 जुलाई शनि	सूर्य सिंह में 7:57, श्रावण सोमवार व्रत	17 अगस्त सोम	वत्स पूजा (डुंगर परम्परा)	7 सितम्बर सोम
चतुर्मास व्रतारम्भः, गण्डमूल	25 जुलाई शनि	पुण्यतिथि ब्रह्मर्षि बाबा दूधधारी जी (हरिद्वार)	17 अग. सोम	भौम प्रदोष व्रत, अगस्तोदयः	8 सितम्बर मंगल
प्रदोष व्रत (श्रावणेवर्जयेच्छाकम्)	26 जुलाई रवि	कल्की जयन्ती, वर्णषष्ठी	18 अगस्त मंगल	गण्डमूल प्रारंभ 16:39	8 सितम्बर मंगल
गण्डमूल समाप्त 10:28	26 जुलाई रवि	पापनाशिनी सप्तमी, तुलसी जयन्ती	19 अगस्त बुध	वत्स द्वादशमी व्रत	8 सितम्बर मंगल
श्रीगुरुव्यास पूर्णिमा, श्रीसत्यनारायण व्रत	29 जुलाई बुध	श्रीदुर्गाष्टमी, दूर्वाष्टमी व्रत	20 अगस्त गुरु	मासिक शिवरात्रि व्रत, गण्डमूल	9 सितम्बर बुध
श्रावण नक्तव्रतारम्भः	30 जुलाई गुरु	मेला चिन्तपूर्णा, चामुण्डा देवी समाप्त	20 अगस्त गुरु	पितृकार्येऽमावस, कुशाग्रहणी अमावस	10 सितम्बर गुरु
पञ्चक प्रारम्भ 6:37, अशून्यशयन व्रत	31 जुलाई शुक्र	गण्डमूल प्रारम्भ 11:52, सं.सि.योग	21 अगस्त शुक्र	गण्डमूल 14:04 तक	10 सितम्बर गुरु
अगस्त		पवित्रा एकादशी व्रत, सं.सि.योग	23 अगस्त रवि	देवकार्येऽमावस, श्रीशक्ति पूजा, मौन व्रत	11 सितम्बर शुक्र
लोकमाण्य तिलक पुण्यतिथि	1 अगस्त शनि	भारतीय भाद्रपद प्रारम्भ, शरद् ऋतु प्रारंभ	23 अगस्त रवि	त्रिपुष्कर योग 7:46 से 12:55 तक	12 सितम्बर शनि
श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय जम्मू 21:39	2 अगस्त रवि	सायन सूर्य कन्या में 8:04	23 अगस्त रवि	मन्वादि वराह जयन्ती, सं.सि.योग	13 सितम्बर रवि
नागपञ्चमी (मरुप्रदेशे)	3 अगस्त सोम	गण्डमूल समाप्त 17:44	23 अगस्त रवि	श्रीगौरी हरितालिका तृतीया व्रत	14 सितम्बर सोम

सिद्धिविनायक व्रत (चन्द्रदर्शन निषेधः) 14 सितम्बर सोम	सर्वपितृश्राद्ध 10 अक्तूबर शनि	प्रदोष व्रत, धनतेरस, मासिक शिवरात्री 6 नवम्बर शुक्र
ऋषि पञ्चमी (नागपञ्चमी डुंगर प्रदेशे) 15 सितम्बर मंगल	शारद नवरात्र प्रा., कलशस्थापन अभिजिते 11 अक्तूबर रवि	धन्वन्तरी जयन्ती 6 नवम्बर शनि
सूर्यषष्ठी व्रत, गण्डमूल प्रारंभ 19:53 17 सितम्बर गुरु	शुक्रास्त पश्चिम में 7:58 11 अक्तूबर रवि	मासिक शिवरात्रि व्रत 7 नवम्बर रवि
स्कन्ददर्शनम् आश्विन संक्रांति 17 सितम्बर गुरु	अग्रसेन जयन्ती, मातामह श्राद्ध 11 अक्तूबर रवि	श्रीहनुमान जयन्ती (उ.भा.) 7 नवम्बर शनि
दधीचि जयन्ती, दूर्वाष्टमी 19 सितम्बर शनि	गण्डमूल शुरू 28:03, सं.सि.योग 14 अक्तूबर बुध	मासिक शिवरात्रि व्रत 7 नवम्बर शनि
महालक्ष्मी असष्टमी, श्रीराधाष्टमी 19 सितम्बर शनि	उपांगललितमा व्रत 15 अक्तूबर गुरु	दीपावली, महालक्ष्मी कुबेर पूजा 8 नवम्बर रवि
श्रीचन्द्र नवमी (उदासीन सम्प्रदाय) 20 सितम्बर रवि	कार्तिक संक्रान्ति, सूर्य तुला मेमं 19:50 17 अक्तूबर शनि	पूजा रूप (नरक) चतुर्दशी, प्रभातेस्नानम् 8 नवम्बर रवि
अदुःख नवमी, नन्दा नवमी 20 सितम्बर रवि	श्रीदुर्गाष्टमी 19 अक्तूबर सोम	देवपितृकार्येऽमावस, सोमवती अमावस 9 नवम्बर सोम
पद्मा एकादशीव्रत 22 सितम्बर मंगल	श्रीदुर्गानवमी, नवरात्र समाप्त 20 अक्तूबर मंगल	गोवर्धन पूजा, अन्नकूट 10 नवम्बर मंगल
वामन द्वादशी, वामनावतार 23 सितम्बर बुध	विजयादशमी (दशहरा), बौद्धावतार 20 अक्तूबर मंगल	भाईदूज (टिक्का), सं.सि. योग 11 नवम्बर बुध
पञ्चक प्रारम्भ 21:56 23 सितम्बर बुध	पञ्चक प्रारम्भ 6:59 21 अक्तूबर बुध	विश्वकर्मा पूजा, यम द्वितीया 11 नवम्बर बुध
“अश्विनेदुग्धव्रतम्” 23 सितम्बर बुध	पापांकुशा एकादशी व्रत, पुनर्वसु 22 अक्तूबर गुरु	यमुना स्नान, गण्डमूल 11:38 से 11 नवम्बर बुध
प्रदोष व्रत 24 सितम्बर गुरु	“कार्तिके द्विदलन्त्यजेत” भारतीय 23 अक्तूबर शुक्र	गण्डमूल 17:17 तक 13 नवम्बर शुक्र
अनन्त चतुर्दशी व्रत, रम्भारोपणम् 25 सितम्बर शुक्र	कार्तिकारम्भः, ऐमन्त ऋतु प्रारंभ 23 अक्तूबर शुक्र	छठ पर्व प्रारम्भ (नहायखाय) 14 नवम्बर शनि
कदली व्रत पूजन 25 सितम्बर शुक्र	सायन सूर्य दृष्टिचक्र में 15:20 23 अक्तूबर शुक्र	सौभाग्य पञ्चमी, नेहरू जयन्ती 14 नवम्बर शनि
श्रीसत्यनारायण व्रत, पूर्णिमा व्रत 26 सितम्बर शनि	गण्डमूल शुरू 20:30 24 अक्तूबर शनि	सूर्योदय अर्घ्य छठ पर्व (बिहार) सं.सि.योग 15 नवम्बर रवि
प्रौष्ठपदी महालय, श्राद्ध प्रारम्भ 26 सितम्बर शनि	शरद् पूर्णिमा, श्रीसत्यनारायण व्रत 25 अक्तूबर रवि	मार्गशीर्ष संक्रांति, सं.सि. योग 16 नवम्बर सोम
गण्डमूल प्रारम्भ 11:08 27 सितम्बर रवि	पञ्चक समाप्ति 19:22 25 अक्तूबर रवि	श्रीगोपाष्टमी, पञ्चक प्रारंभ 15:29 17 नवम्बर मंगल
पञ्चक समाप्त 10:16, गण्डमूल 28 सितम्बर सोम	श्री बाल्मीकि जयन्ती, पूर्णिमा व्रत 26 अक्तूबर सोम	युगादि कुष्माण्ड (अक्षय नवमी) 18 नवम्बर बुध
श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 20:00 29 सितम्बर मंगल	नवान्न भक्षण, कार्तिक स्नान प्रारंभ 26 अक्तूबर सोम	हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत (स्मार्ति) 20 नवम्बर शुक्र
गण्डमूल समाप्त 9:03, सं.सि.योग 29 सितम्बर मंगल	गण्डमूल 17:41 तक 26 अक्तूबर सोम	देवोत्थानं, तुलसी विवाह 20 नवम्बर शुक्र
अक्तूबर	त्रिपुष्कर योग 15:39 से 28:07 तक 27 अक्तूबर मंगल	चतुर्मास व्रत समाप्ति 20 नवम्बर शुक्र
श्रीलाल बहादुर शास्त्री, श्रीगांधी जयन्ती 2 अक्तूबर शुक्र	श्री गुरु रामदास जयन्ती 27 अक्तूबर मंगल	भीष्म पञ्चक प्रारम्भ 20 नवम्बर शुक्र
श्रीमहालक्ष्मी व्रत, अशोकाष्टमी 3 अक्तूबर शनि	शुक्रोदय पूर्व में 19:08, सं.सि.योग 28 अक्तूबर बुध	हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत (वैष्णव) 21 नवम्बर शनि
सौभाग्यवतीनांश्राद्धम् 4 अक्तूबर रवि	कर्क चतुर्थी व्रत (करवाचौथ) 29 अक्तूबर गुरु	पञ्चक समाप्ति: 29:54 21 नवम्बर रवि
गण्डमूल शुरू 23:09, सं.सि.योग 5 अक्तूबर सोम	चन्द्रोदय 20:24 29 अक्तूबर गुरु	प्रदोष व्रत, भारतीय मार्गशीर्षारम्भ 22 नवम्बर रवि
इन्द्रा एकादशी व्रत 6 अक्तूबर मंगल	स्कन्दषष्ठी 31 अक्तूबर शनि	गण्डमूल 28:15 तक, सं.सि. योग 22 नवम्बर रवि
सन्यासीनांश्राद्धम् 7 अक्तूबर बुध	नवम्बर	वैकुण्ठ चतुर्दशी 23 नवम्बर सोम
प्रदोष व्रत, मासिक शिवरात्रि व्रत 8 अक्तूबर गुरु	अहोई अष्टमी व्रत, राधाष्टमी 1 नवम्बर रवि	पूर्णिमा व्रत, श्रीसत्यनारायण व्रत 24 नवम्बर मंगल
शस्त्रहतानां श्राद्धम् 9 अक्तूबर शुक्र	रविपुष्य योग, गण्डमूल प्रारम्भ 28:30 1 नवम्बर रवि	सं.सि. योग, श्रीगुरु नानक देव जयन्ती 24 नवम्बर मंगल
शनैश्चरी अमावस, देवपितृकार्येऽमावस 10 अक्तूबर शनि	रमा एकादशी व्रत 5 नवम्बर गुरु	कार्तिक व्रतोद्घापन 24 नवम्बर मंगल

मेला झिड़ी बावा जितो, काना चक्क जम्मू 24 नवम्बर मंगल	गण्डमूल प्रारंभ 20:12	26 दिसम्बर शनि	सं.सि. योग	27 जनवरी बुध
भीष्म पञ्चक समाप्त 24 नवम्बर मंगल	त्रिपुष्कर योग 15:43 से	29 दिसम्बर मंगल	स्वामी विवेकानन्द जयन्ती	28 जनवरी गुरु
कार्तिक स्नानपूर्तिः, देव दीपावली 24 नवम्बर मंगल	सं.सि. योग 15:36 से	30 दिसम्बर बुध	गण्डमूल प्रारंभ 30:27	31 जनवरी रवि
श्रीगणेश चतुर्थी व्रत 27 नवम्बर शुक्र	श्री रुक्मिणी अष्टमी	31 दिसम्बर गुरु	श्रीगुरु हरराय जयन्ती	31 जनवरी रवि
चंद्रोदय जम्मू 20:18	जनवरी सन् 2027 ई०		पुष्य तिथि पं. रामेश्वर दत्त रैणा	31 जनवरी रवि
गण्डमूल प्रारम्भ, सं.सि.योग	सं.सि. योग	2 जनवरी शनि	राज ज्योतिषी अखनूर	
रवि पुष्य योग 10:59 तक	सफला एकादशी व्रत, सुरुपद्मादशी	3 जनवरी रवि	फरवरी	
दिसम्बर	त्रिपुष्कर योग 16:08 से 21:36 तक	3 जनवरी रवि	षट्तिला एकादशी व्रत	2 फरवरी मंगल
श्रीभैरवाष्टमी, गण्डमूल 9:00 तक	गण्डमूल 24:14 से संसि. योग	4 जनवरी सोम	प्रदोष व्रत, तिल द्वादशी	3 फरवरी बुध
उत्पन्ना एकादशी व्रत	भौम प्रदोष व्रत, मासिक शिवरात्रि	5 जनवरी मंगल	गण्डमूल 12:26 तक	3 फरवरी बुध
प्रदोष व्रत	गण्डमूल 20:08 तक	6 जनवरी बुध	मासिक शिवरात्रि व्रत	4 फरवरी गुरु
मासिक शिवरात्रि व्रत	देवपितृकार्येऽमावस	7 जनवरी गुरु	देवपितृकार्येऽमावस	6 फरवरी शनि
देवपितृकार्येऽमावस, गण्डमूल प्रा.18:16	सं.सि. यो 12:16 से	9 जनवरी शनि	मौनी अमावस, सं.सि.योग	6 फरवरी शनि
गण्डमूल 23:58 तक	पञ्चक प्रारम्भ 28:34	10 जनवरी रवि	गुप्त नवरात्रे प्रारम्भ	7 फरवरी रवि
नागपञ्चमी, पञ्चक प्रा. 22:35	माघ संक्रान्ति, निरयन उत्तरायण प्रारंभ	14 जनवरी गुरु	श्रीगौरी तृतीया	9 फरवरी मंगल
सं.सि. योग	गण्डमूल प्रारंभ 23:18	14 जनवरी गुरु	वरद कुंद चतुर्थी, तिल चतुर्थी व्रत	10 फरवरी बुध
स्कन्द षष्ठी	पञ्चक समाप्ति: 23:51, सं.सि.योग	15 जनवरी शुक्र	गण्डमूल प्रारंभ 28:56	10 फरवरी बुध
नन्दा सप्तमी, मित्र सप्तमी, पौष संक्रांति	श्रीगुरुगोविन्द सिंह जयंती	15 जनवरी शुक्र	बसन्त पञ्चमी	11 फरवरी गुरु
गण्डमूल प्रारंभ 16:10 से	पुत्रदा एकादशी व्रत (स्मार्त)	18 जनवरी सोम	पञ्चक समाप्त 5:42, सं.सि. योग	12 फरवरी शुक्र
पञ्चक समाप्त 15:58	द्विपुष्कर योग 18:54 से	19 जनवरी मंगल	गण्डमूल 29:56 तक	12 फरवरी शुक्र
मोक्षदा एकादशी व्रत, श्री गीता जयंती	पुत्रदा एकादशी व्रत (वैष्णव)	19 जनवरी मंगल	पुत्र सप्तमी, फाल्गुन संक्रांति	13 फरवरी शनि
सं.सि.योग, गण्डमूल 14:55 तक	प्रदोष व्रत (घृतदान महत्त्व), सं.सि.योग	20 जनवरी बुध	भीष्माष्टमी	14 फरवरी रवि
सोम प्रदोष व्रत, अनङ्ग त्रयोदशी	भारतीय माघारम्भः	21 जनवरी गुरु	गुप्त नवरात्रे समाप्त, सं.सि.योग	15 फरवरी सोम
सायन सूर्य मकर में	सं.सि.योग 13:24 से	21 जनवरी गुरु	जया एकादशी व्रत	17 फरवरी बुध
उत्तरायण प्रारंभ 26:20	श्रीसत्यनारायण व्रत, पूर्णिमा व्रत	22 जनवरी शुक्र	प्रदोष व्रत, श्री भीष्म द्वादशी	18 फरवरी गुरु
शिशर ऋतु प्रारंभ	माघ स्नानारम्भः, सं.सि. योग	22 जनवरी शुक्र	सां. सूर्य मीन में, वसन्त ऋतु प्रारंभ	18 फरवरी गुरु
पिशाचमोचनश्राद्धम्, भारतीय पौषारम्भ	नेता सुभाषचन्द्रबोस जयन्ती	23 जनवरी शनि	गण्डमूल 18:35 से	19 फरवरी शुक्र
सं.सि.योग 10:45 तक	गण्डमूल समाप्त 26:41	24 जनवरी रवि	श्रीगुरु रविदास जयन्ती	20 फरवरी शनि
क्रिसमिस डे, सं.सि.योग	संकट चतुर्थी व्रत (भुग्गा व्रत)	25 जनवरी सोम	श्रीसत्यनारायण व्रत, पूर्णिमा व्रत	20 फरवरी शनि
श्रीगणेश चतुर्थी व्रत	सौभाग्यसुन्दरी व्रत, चन्द्रोदय 21:18	25 जनवरी सोम	माघ स्नान पूर्ति, भारतीय फाल्गुन प्रारंभ	20 फरवरी शनि
चंद्रोदय जम्मू 20:16	भारतीय गणराज्य दिवस	26 जनवरी मंगल	गण्डमूल 13:51 तक	21 फरवरी रवि

श्रीगणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय जम्मू 22:09, सं.सि. योग त्रिपुष्कर योग 7:05 से 11:39 तक गण्डमूल 13:47 से	24 फरवरी बुध 24 फरवरी बुध 27 फरवरी शनि 28 फरवरी रवि	अप्रैल पापमोचिनी एकादशी व्रत पञ्चक प्रारंभ 25:32, सं.सि. योग द्विपुष्कर योग 14:41 तक प्रदोष व्रत, वारूणी योग 16:32 तक मासिक शिवरात्रि व्रत देवपितृकार्येऽमावस, सं.सि. योग गण्डमूल प्रारंभ 18:23 विक्रमी संवत् 2083 पूर्ण	2 अप्रैल शुक्र 2 अप्रैल शुक्र 3 अप्रैल शनि 4 अप्रैल रवि 5 अप्रैल सोम 6 अप्रैल मंगल 6 अप्रैल मंगल 6 अप्रैल मंगल	स्वतन्त्रता दिवस नवरोजपारसी नववर्ष ओणम जन्माष्टमी - वैष्णव गणेश चतुर्थी विनायक चतुर्थी गांधी जयन्ती विजयादशमी दशहरा कर्क चतुर्थी (करवा चौथ) दीपावली गुरु नानक जयन्ती क्रिसमस डे, तुलसी पूजा सन् 2027 ई.	15 अगस्त शनि 16 अगस्त रवि 26 अगस्त बुध 04 सितम्बर शुक्र 14 सितम्बर सोम 02 अक्टूबर शुक्र 20 अक्टूबर मंगल 29 अक्टूबर गुरु 08 नवम्बर रवि 24 नवम्बर मंगल 25 दिसम्बर शुक्र
मार्च श्रीरामदास नवमी गण्डमूल 19:27 तक विजया एकादशी व्रत प्रदोष व्रत, सं.सि. योग महाशिवरात्रि व्रत, पञ्चक प्रारंभ 17:34 देवपितृकार्येऽमावस, सोमवती अमावस सं.सि.योग 9:58 से श्रीरामकृष्ण परमहंस जयन्ती गण्डमूल प्रारम्भ 10:52 पञ्चक समाप्त 11:19 सं.सि. योग, गण्डमूल 11:22 तक ऋषि याज्ञवल्क्य जयन्ती चैत्र संक्रान्ति, सं.सि. योग होलाष्टक प्रारम्भ (16 मार्च से 22 मार्च तक) आमलकी एकादशी व्रत, सं.सि. योग गुरु पुष्य योग 6:41 से 27:21 तक मेला श्री श्याम जी (खाटू) शनि प्रदोष व्रत होलिका दहन, श्रीसत्यनारायण व्रत पूर्णिमा व्रत द्विपुष्कर योग 19:49 से वसन्तोत्सव, होलिकविभूति धारण श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय जम्मू 21:54 गण्डमूल प्रारंभ 22:14, रंगपञ्चमी शीतलापूजनम्, गण्डमूल 27:18 तक	1 मार्च सोम 2 मार्च मंगल 4 मार्च गुरु 5 मार्च शुक्र 6 मार्च शनि 8 मार्च सोम 9 मार्च मंगल 10 मार्च बुध 10 मार्च बुध 11 मार्च गुरु 12 मार्च शुक्र 13 मार्च शनि 15 मार्च सोम 16 मार्च मंगल 18 मार्च गुरु 18 मार्च गुरु 19 मार्च शुक्र 20 मार्च शनि 21 मार्च रवि 22 मार्च सोम 23 मार्च मंगल 23 मार्च मंगल 25 मार्च गुरु 27 मार्च शनि 29 मार्च सोम	भारत सरकार द्वारा अनुमोदित छुट्टियाँ सन् 2026-27 ई. आंगल नववर्ष पोंगल मकर संक्रान्ति, बीहू श्री पंचमी वसन्त पंचमी गणतन्त्र दिवस महाशिवरात्रि होली गुड़ी पड़वा नवरात्रि पहला दिन चैत्र शुक्लादि चेटी चन्द ईदुलफितर रामनवमी महावीर जयन्ती गुड फ्राइडे मेषादि उगाड़ी तमिल नववर्ष विशू वैशाखी ईदुलजुहा बुद्ध पूर्णिमा मोहर्रम रथयात्रा छठ पूजा	1 जनवरी गुरु 14 जनवरी बुध 14 जनवरी बुध 23 जनवरी शुक्र 26 जनवरी सोम 15 फरवरी रवि 02 मार्च सोम 19 मार्च गुरु 19 मार्च गुरु 19 मार्च गुरु 20 मार्च शुक्र 21 मार्च शनि 26 मार्च गुरु 30 मार्च सोम 03 अप्रैल शुक्र 14 अप्रैल मंगल 15 अप्रैल बुध 29 अप्रैल बुध 01 मई शुक्र 26 जून शुक्र 16 जुलाई गुरु 19 जुलाई रवि	आंगल नववर्ष बीहू पोंगल मकर संक्रान्ति, बीहू गणतन्त्र दिवस श्री पंचमी, बसन्त पंचमी शिवाजी जयन्ती गुरु रविदास जयन्ती स्वामी दयानन्द सरस्वती जयंती महाशिवरात्रि होलिका दहन डोलयात्रा सन् 2026 ई. माघ फाल्गुन चैत्र वैशाख प्र. ज्येष्ठ द्वि. ज्येष्ठ आषाढ़ श्रावण	1 जनवरी शुक्र 14. जनवरी गुरु 14 जनवरी गुरु 14 जनवरी गुरु 26 जनवरी मंगल 11 फरवरी गुरु 19 फरवरी शुक्र 20 फरवरी शनि 2 मार्च मंगल 6 मार्च शनि 21 मार्च रवि 22 मार्च सोम 6 जनवरी मंगलवार 5 फरवरी गुरुवार 6 मार्च शुक्रवार 5 अप्रैल रविवार 5 मई मंगल 3 जून बुधवार 3 जुलाई शुक्रवार 2 अगस्त रविवार

भाद्रपद	31 अगस्त	सोमवार
आश्विन	29 सितम्बर	मंगलवार
कार्तिक (करवाचौथ)	29 अक्टूबर	गुरुवार
मार्गशीर्ष	27 नवम्बर	शुक्रवार
पौष	26 दिसम्बर	शनिवार
सन् 2027 ई.		
माघ	25 जनवरी	सोमवार
फाल्गुन	24 फरवरी	बुधवार
चैत्र	25 मार्च	गुरुवार

गण्डमूल

सन् 2006 ई.

दिनांक	प्रारम्भ	दिनांक	समाप्त
दिन	घं. मि.	दिन	घं. मि.
28 मार्च	शनि 14:50	30 मार्च	सोम 14:47
06 अप्रैल	सोम 26:56	09 अप्रैल	गुरु 08:48
16 अप्रैल	गुरु 13:58	18 अप्रैल	शनि 09:42
24 अप्रैल	शुक्र 20:14	26 अप्रैल	रवि 20:27
04 मई	सोम 09:57	06 मई	बुध 15:53
13 मई	बुध 24:17	15 मई	शुक्र 20:14
21 मई	गुरु 26:49	23 मई	शनि 26:09
31 मई	रवि 16:11	02 जून	मंगल 22:06
10 जून	बुध 09:21	12 जून	शुक्र 06:28
18 जून	गुरु 11:32	20 जून	शनि 09:25
27 जून	शनि 22:11	29 जून	सोम 28:03
07 जुलाई	मंगल 16:24	09 जुलाई	गुरु 14:56
15 जुलाई	बुध 21:46	17 जुलाई	शुक्र 18:34
24 जुलाई	शुक्र 28:36	27 जुलाई	सोम 10:28
03 अगस्त	सोम 22:00	05 अगस्त	बुध 21:18
12 अगस्त	बुध 07:59	13 अगस्त	गुरु 28:43
21 अगस्त	शुक्र 11:52	23 अगस्त	रवि 17:44
30 अगस्त	रवि 27:44	01 सितम्बर	मंगल 26:42
08 सितम्बर	मंगल 16:39	10 सितम्बर	गुरु 14:04
17 सितम्बर	गुरु 19:53	19 सितम्बर	शनि 25:42
27 सितम्बर	रवि 11:08	29 सितम्बर	मंगल 09:03

05 अक्टूबर	सोम 23:09	07 अक्टूबर	बुध 21:40
14 अक्टूबर	बुध 28:03	17 अक्टूबर	शनि 09:47
24 अक्टूबर	शनि 20:32	26 अक्टूबर	सोम 17:41
01 नवंबर	रवि 28:30	03 नवंबर	मंगल 27:26
11 नवंबर	बुध 11:38	13 नवंबर	शुक्र 17:17
20 नवंबर	शनि 06:50	22 नवंबर	रवि 28:15
29 नवंबर	रवि 10:59	01 दिसंबर	मंगल 09:00
08 दिसंबर	मंगल 18:16	10 दिसंबर	गुरु 23:58
18 दिसंबर	शुक्र 16:10	20 दिसंबर	रवि 14:55
26 दिसंबर	शनि 20:12	28 दिसंबर	सोम 16:33

सन् 2027 ई.

04 जनवरी	सोम 24:14	06 जनवरी	बुध 30:08
14 जनवरी	गुरु 23:18	16 जनवरी	शनि 23:38
23 जनवरी	शनि 07:37	24 जनवरी	रवि 26:41
31 जनवरी	रवि 30:27	03 फरवरी	बुध 12:26
10 फरवरी	बुध 18:56	12 फरवरी	शुक्र 29:56
19 फरवरी	शुक्र 18:35	21 फरवरी	रवि 13:51
28 फरवरी	रवि 13:47	02 मार्च	मंगल 19:27
06 मार्च	बुध 10:52	12 मार्च	शुक्र 11:22
18 मार्च	गुरु 27:21	20 मार्च	शनि 23:44
27 मार्च	शनि 22:14	29 मार्च	सोम 27:18
06 अप्रैल	मंगल 18:23	08 अप्रैल	गुरु 17:59

गण्डमूल विचार

अश्विनी चार चरण फलोदश

पुल्लिङ्ग चरण	स्त्रीलिङ्ग चरण
1. पिता को अशुभ	पिता को कष्ट
2. धन/ऐश्वर्य वृद्धि	धनधान्य लाभ
3. मन्त्री तुल्य	राजकाज में प्रतिष्ठा
4. राज्य सम्मान	मान सम्मान

आश्लेषाचारचरण फल

पुल्लिङ्ग चरण	स्त्रीलिङ्ग चरण
1. शान्ति से शुभ	सुख समृद्धि
2. धन/ऐश्वर्य नाश	सास को कष्ट
3. माता को कष्ट	सास को कष्ट
4. पिता को कष्ट	ससुर को कष्ट

मघाचार चरण फल

पुल्लिङ्ग चरण स्त्रीलिङ्ग चरण

1. माता को कष्ट	माता को कष्ट
2. पिता को कष्ट	पिता को कष्ट
3. सुख वृद्धि	धन समृद्धि
4. धनधान्य प्राप्ति	धनधान्य प्राप्ति

ज्येष्ठाचार चरण फल

पुल्लिङ्ग चरण स्त्रीलिङ्ग चरण

1. बेटे भाई को कष्ट	जेठ को कष्ट
2. छोटा भाई को कष्ट	छोटी बहिन/देवर को कष्ट
3. माता को कष्ट	माता/सास को कष्टप्रद
4. स्वयं को कष्टप्रद	देवर को श्रेष्ठ, स्वयं कष्ट

मूलचार चरण फल

पुल्लिङ्ग चरण स्त्रीलिङ्ग चरण

1. पिता को कष्ट	श्वसुर को नेष्ट
2. माता को कष्ट	सास को कष्ट
3. धन हानि	परिवार में दोष
4. शान्ति से सुख	शान्ति से सुख

रेवतीचार चरण फल

पुल्लिङ्ग चरण स्त्रीलिङ्ग चरण

1. राजकार्य प्रतिष्ठा	राजकार्य प्रतिष्ठा
2. मन्त्रीतुल्य	मन्त्रीतुल्य
3. धन वृद्धि	धन/ऐश्वर्य वृद्धि
4. स्वयं को कष्ट	स्वयं को कष्ट

पञ्चक विचार

धनिष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण से रेवती नक्षत्रान्त तक पञ्चक होते हैं। शास्त्र दृष्टि से पञ्चकों में लकड़ी काटना; लकड़ी खरीदना; दक्षिण दिशा की यात्रा; प्रेत दाह संस्कार; धातु संचय करना; दुकान-मकान का छत डालना; चटाई, चारपाई, सोफा, आदि का बनाना शुभ नहीं होता। पञ्चकों में यदि यह कार्य किए जाएँ तो उसमें पाँच गुणा

हानि होती है। **ध्यान रहे**— विवाह, मुण्डन, यज्ञोपवीत, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, वधु प्रवेश, रक्षाबन्धन, भैया दूज, आदि पर्वों में शास्त्रकारों ने कहीं भी निषेध नहीं किया है। व्यर्थ में पञ्चकों के विषय में भ्रमित नहीं रहना चाहिए।

सन् 2026 ई.

प्रारम्भ			समाप्त		
दिनांक	दिन	घं. मि.	दिनांक	दिन	घं. मि.
12 अप्रैल	रवि	27:44	17 अप्रैल	शुक्र	12:02
10 मई	रवि	12:12	14 मई	गुरु	22:33
06 जून	शनि	19:03	11 जून	गुरु	08:16
03 जुलाई	शुक्र	24:47	08 जुलाई	बुध	16:00
31 जुलाई	शुक्र	06:37	04 अगस्त	मंगल	21:54
27 अगस्त	गुरु	13:35	31 अगस्त	सोम	27:23
23 सितंबर	बुध	21:56	28 सितंबर	सोम	10:16
21 अक्तूबर	बुध	06:59	25 अक्तूबर	रवि	19:22
17 नवंबर	मंगल	15:29	21 नवंबर	शनि	29:54
14 दिसंबर	सोम	22:35	19 दिसंबर	शनि	15:58

सन् 2027 ई.

10 जनवरी	रवि	28:34	15 जनवरी	शुक्र	23:51
07 फरवरी	रवि	10:36	12 फरवरी	गुरु	05:42
06 मार्च	शनि	17:34	11 मार्च	गुरु	11:19
02 अप्रैल	शुक्र	25:32	07 अप्रैल	बुध	18:25

एकादशी व्रत

सन् 2026 ई.

पौष कृष्ण पक्ष	14 जनवरी
माघ शुक्ल पक्ष	29 जनवरी
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	13 फरवरी
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	27 फरवरी
चैत्र कृष्ण पक्ष	15 मार्च
चैत्र शुक्ल पक्ष	29 मार्च
वैशाख कृष्ण पक्ष	13 अप्रैल
वैशाख शुक्ल पक्ष	27 अप्रैल

प्र. शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष
प्र. अधि. ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष
द्वि. अधि. ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष
द्वि. शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

आषाढ़ कृष्ण पक्ष	13 मई
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	27 मई
आषाढ़ शुक्ल पक्ष	11 जून
श्रावण कृष्ण पक्ष	25 जून
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	10 जुलाई (स्मार्त)
आषाढ़ शुक्ल पक्ष	11 जुलाई (वैष्णव)
श्रावण कृष्ण पक्ष	25 जुलाई
श्रावण शुक्ल पक्ष	9 अगस्त
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	23 अगस्त
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	7 सितम्बर
आश्विन कृष्ण पक्ष	22 सितम्बर
आश्विन शुक्ल पक्ष	6 अक्टूबर
कार्तिक कृष्ण पक्ष	22 अक्टूबर
कार्तिक शुक्ल पक्ष	5 नवम्बर
कार्तिक कृष्ण पक्ष	20 नवम्बर (स्मार्त)
कार्तिक शुक्ल पक्ष	21 नवम्बर (वैष्णव)
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	4 दिसम्बर
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	20 दिसम्बर (श्रीगीता जयन्ती)

सन् 2027 ई.

पौष कृष्ण पक्ष	3 जनवरी
पौष शुक्ल पक्ष	18 जनवरी (स्मार्त व्रत)
पौष शुक्ल पक्ष	19 जनवरी (वैष्णव)
माघ कृष्ण पक्ष	2 फरवरी
माघ शुक्ल पक्ष	17 फरवरी
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	4 मार्च
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	18 मार्च
चैत्र कृष्ण पक्ष	2 अप्रैल

पूर्णिमा, श्री सत्यनारायण व्रत

पूर्णिमा व्रत श्रीसत्यनारायण व्रत
सन् 2026 ई.

पौष	3 जनवरी	2 जनवरी
माघ	1 फरवरी	1 फरवरी
फाल्गुन	3 मार्च	2 मार्च
चैत्र	2 अप्रैल	1 अप्रैल

वैशाख	1 मई	1 मई
ज्येष्ठ	31 मई	30 मई
आषाढ़	29 जून	29 जून
श्रावण	29 जुलाई	29 जुलाई
(गुरु पूर्णिमा)		
भाद्रपद	28 अगस्त	27 अगस्त
(रक्षाबन्धन)		
आश्विन	26 सितम्बर	26 सितम्बर
कार्तिक	26 अक्टूबर	25 अक्टूबर
	(उदया)	(शरत् पूर्णिमा)
मार्गशीर्ष	24 नवम्बर	24 नवम्बर
पौष	23 दिसम्बर	23 दिसम्बर

सन् 2027 ई.

माघ	22 जनवरी	22 जनवरी
फाल्गुन	20 फरवरी	20 फरवरी
चैत्र	22 मार्च	21 मार्च

अमावस्याएं

(स्नान-दान, देव पितरादि तर्पणाय)

सन् 2026 ई.

माघ अमावस	18 जनवरी (देवपितृकार्येऽमावस)
फाल्गुन अमावस	17 फरवरी (देवपितृकार्येऽमावस)
चैत्र अमावस	18 मार्च (पितृकार्येऽमावस)
	19 मार्च (देवकार्येऽमावस)
वैशाख अमावस	17 अप्रैल (देवपितृकार्येऽमावस)
ज्येष्ठ अमावस	16 मई (पितृकार्येऽमावस)
द्वि. अधि. ज्येष्ठ अमावस	14 जून (पितृकार्येऽमावस)
	15 जून (देवकार्येऽमावस) सोमवती अमावस
आषाढ़ अमावस	14 जुलाई (देवकार्येऽमावस)
श्रावण अमावस	12 अगस्त (देवपितृकार्येऽमावस)
	(हरियाली अमावस)
भाद्रपद अमावस	10 सितम्बर (पितृकार्येऽमावस)
	शनैश्चरी अमावस
	11 सितम्बर (देवकार्येऽमावस)

आश्विन अमावस 10 अक्टूबर (देवपितृकार्येऽमावस) शनैश्चरी अमावस	8 सितम्बर	प्रतिपदा का श्राद्ध 27 सितम्बर
कार्तिक अमावस 9 नवम्बर (देवपितृकार्येऽमावस)	24 सितम्बर	द्वितीया का श्राद्ध 28 सितम्बर
मार्गशीर्ष अमावस 8 दिसम्बर (देवपितृकार्येऽमावस)	8 अक्टूबर	तृतीया का श्राद्ध 29 सितम्बर
सन् 2027 ई.	23 अक्टूबर	चतुर्थी का श्राद्ध 30 सितम्बर
पौष अमावस 7 जनवरी (देवपितृकार्येऽमावस) कुहूः	6 नवम्बर	पञ्चमी का श्राद्ध 1 अक्टूबर (12:35 पूर्व)
माघ अमावस 6 फरवरी (देवपितृकार्येऽमावस)	22 नवम्बर	षष्ठी का श्राद्ध 1 अक्टूबर (12:35 पश्चात्)
मौनी अमावस	6 दिसम्बर	सप्तमी का श्राद्ध 2 अक्टूबर
फाल्गुन अमावस 8 मार्च (देवपितृकार्येऽमावस)	21 दिसम्बर	अष्टमी का श्राद्ध 3 अक्टूबर
सोमवती अमावस	सन् 2027 ई.	नवमी का श्राद्ध 4 अक्टूबर (सौभाग्यवर्तानां श्राद्ध)
चैत्र अमावस 6 अप्रैल (देवपितृकार्येऽमावस)	पौष कृष्ण पक्ष (भौम प्रदोष व्रत) 5 जनवरी	दशमी का श्राद्ध 5 अक्टूबर
(नोट :- मध्याह्न काल व्यापिनी अमावस्या पितृकार्य तथा सूर्योदय व्यापिनी देवकार्य में ग्राह्य होती है।)	पौष शुक्ल पक्ष 20 जनवरी	एकादशी का श्राद्ध 6 अक्टूबर
प्रदोष व्रत	माघ कृष्ण पक्ष 3 फरवरी	द्वादशी का श्राद्ध 7 अक्टूबर (सन्यासिनां श्राद्ध)
सन् 2026 ई.	माघ शुक्ल पक्ष 18 फरवरी	त्रयोदशी का श्राद्ध 8 अक्टूबर
पौष शुक्ल पक्ष 1 जनवरी	फाल्गुन कृष्ण पक्ष 5 मार्च	चतुर्दशी का श्राद्ध 9 अक्टूबर (शस्त्रहतानां श्राद्ध)
माघ कृष्ण पक्ष 16 जनवरी	फाल्गुन शुक्ल पक्ष (शाने प्रदोष व्रत) 20 मार्च	सर्वपितृ श्राद्ध 10 अक्टूबर
माघ शुक्ल पक्ष 30 जनवरी	चैत्र कृष्ण पक्ष 4 अप्रैल	नोट- सौभाग्यवती स्त्री का श्राद्ध नवमी तिथि को ही करना चाहिए और चतुर्दशी को केवल शस्त्र, विष, अग्नि, दुर्घटनाओं आदि में जिनकी मृत्यु हुई हो उनका श्राद्ध करना चाहिए। चतुर्दशी तिथि को जिनकी सामान्य मृत्यु हुई हो उनका श्राद्ध अमावस्या के दिन करने का भी विधान है।
फाल्गुन कृष्ण पक्ष 14 फरवरी	पितृ पक्ष में श्राद्ध	दशमहाविद्या जयन्ती
फाल्गुन शुक्ल पक्ष 1 मार्च	पितृ श्राद्ध का मुख्य काल अपराह्न काल होता है।	सन् 2026 ई.
चैत्र कृष्ण पक्ष (सोम प्रदोष व्रत) 16 मार्च	अपराह्नकाल किसे कहते हैं? दिन में पाँच प्रकार का काल होता है इनके समय का मान इस प्रकार से होता है। दिनमान में (या सूर्यास्त में सूर्योदय घटाकर) पाँच का भाग देकर सूर्योदय में पहला भाग जोड़ने से प्रातःकाल का समय होता है इसमें द्वितीय भाग जोड़ने से संग्रह काल का समय होता है इसमें तीसरा भाग जोड़ने से मध्याह्न से सन्ध्याकाल का समय होता है। चौथा भाग जोड़ने से अपराह्न काल का समय होता है, पाँचों भाग जोड़ने से सन्ध्याकाल का समय होता है। मुख्य काल अपराह्न काल श्राद्ध में ग्राह्य होता है, मुख्यकाल प्राप्त हो तो गौणकाल क्यों? भ्रान्तियों से बचना चाहिए। -सम्पादक	श्री महातारा जयन्ती 26 मार्च
सन् 2027 ई.	आयु वृद्धि, यश, प्रतिष्ठा, सुख शान्ति वृद्धि के लिए श्रद्धा एवं सद्भावना से पितृ यज्ञ तथा श्राद्ध करना सर्वदा शुभफलदायक होता है। सन् 2026 ई० में श्राद्ध तिथियाँ निम्न प्रकार से हैं :-	श्री मातङ्गी जयन्ती 19 अप्रैल
चैत्र शुक्ल पक्ष (सोम प्रदोष व्रत) 30 मार्च	पूर्णमा का श्राद्ध 26 सितम्बर	श्री बगुलामुखी जयन्ती 24 अप्रैल
वैशाख कृष्ण पक्ष 15 अप्रैल		श्री छिन्नमस्तिका जयन्ती 1 मई
वैशाख शुक्ल पक्ष (भौम प्रदोष व्रत) 28 अप्रैल		श्री धूमावती जयन्ती 22 मई
प्र. शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष 14 मई		श्री महाकाली जयन्ती 23 सितम्बर
प्र. अधि. ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष 28 मई		श्री भुवनेश्वरी जयन्ती 10 जुलाई
द्वि. अधि. ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष 12 जून		श्री षोडशी जयन्ती 28 अक्टूबर
द्वि. शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष 27 जून		श्री कमला जयन्ती 8 दिसम्बर
आषाढ़ कृष्ण पक्ष 12 जुलाई		श्री ललिता जयन्ती 23 दिसम्बर
आषाढ़ शुक्ल पक्ष 26 जुलाई		
श्रावण कृष्ण पक्ष (सोम प्रदोष व्रत) 10 अगस्त		
श्रावण शुक्ल पक्ष (सोम प्रदोष व्रत) 25 अगस्त		

जैन व्रत त्यौहार

सन् 2026 ई.

अभिनन्दनजी ज्ञान	02 जनवरी
धर्मनाथजी ज्ञान	03 जनवरी
पद्मप्रभ जी गर्भ	08 जनवरी
कृष्ण अष्टमी	10 जनवरी
श्री शीतलनाथ जन्म तप	15 जनवरी
मेरु त्रयोदशी	16 जनवरी
भगवान ऋषभदेव मोक्ष	17 जनवरी
श्रेयांस नाथजी ज्ञान	18 जनवरी
वासुपूज्यजी ज्ञान	20 जनवरी
दशलक्षण प्रा., विमलनाथजी जन्म-तप	22 जनवरी
मर्यादा महोत्सव	25 जनवरी
अजितनाथजी जन्म-तप	28 जनवरी
अभिनन्दनजी जन्म-तप	30 जनवरी
धर्मनाथजी जन्म-तप	30 जनवरी
श्री जिनेन्द्र रथयात्रा	31 जनवरी
दशलक्षण समाप्त	31 जनवरी
अरहनाथजी गर्भ	04 फरवरी
पद्मप्रभुजी मोक्ष	05 फरवरी
सुपाश्वनाथजी ज्ञान	07 फरवरी
सुपाश्वनाथजी मोक्ष	8 फरवरी
चन्द्रप्रभुजी ज्ञान	8 फरवरी
अष्टमी तिथि (कृ.)	9 फरवरी
पुष्पदन्तजी गर्भ	10 फरवरी
ऋषभदेवजी ज्ञान, श्रेयांशनाथजी जन्म	13 फरवरी
श्रेयांशनाथजी तप	13 फरवरी
मुनि सुव्रतनाथजी मोक्ष	14 फरवरी
चौदस तिथि (कृ.)	16 फरवरी
वासुपूज्यजी जन्म-तप	16 फरवरी
मल्लिनाथजी मोक्ष	22 फरवरी
चन्द्रप्रभुजी मोक्ष	23 फरवरी

अष्टमी तिथि (शु.)	24 फरवरी
अष्टाहिका प्रारम्भ	24 फरवरी
सम्भवनाथजी गर्भ कल्याणक	24 फरवरी
चौदस तिथि (शु.)	2 मार्च
अष्टाहिका समाप्त	3 मार्च
पार्श्वनाथजी ज्ञान	7 मार्च
चन्द्रप्रभुजी गर्भ	8 मार्च
अष्टमी तिथि (कृ.)	11 मार्च
शीतलनाथजी गर्भ	11 मार्च
ऋषभदेवजी जन्म-तप	12 मार्च
चौदस तिथि (कृ.)	17 मार्च
अनन्तनाथजी मोक्ष	18 मार्च
अरहनाथजी मोक्ष - ज्ञान कल	18 मार्च
मल्लिनाथजी गर्भ	19 मार्च
कुंथुनाथजी ज्ञान	21 मार्च
दशलक्षण प्रारम्भ	22 मार्च
अजितनाथजी मोक्ष	23 मार्च
सम्भवनाथजी मोक्ष	24 मार्च
आर्यबिल ओली प्रारम्भ	25 मार्च
अष्टमी तिथि (शु.)	26 मार्च
सुमतिनाथजी जन्म, ज्ञान, मोक्ष	28 मार्च
महावीरजी जन्म	30 मार्च
दशलक्षण समाप्त	31 मार्च
चौदस तिथि (शु.)	31 मार्च
पद्मप्रभुजी ज्ञान	1 अप्रैल
आर्यबिल ओली समाप्त	2 अप्रैल
पार्श्वनाथजी गर्भ	4 अप्रैल
ज्येष्ठ जिनवार व्रत प्रा.	2 मई
श्रेयांशनाथजी गर्भ	8 मई
अष्टमी तिथि (कृ.)	10 मई
विमलनाथजी गर्भ	12 मई
अनन्तनाथजी जन्म-तप	14 मई

चौदस तिथि (कृ.)	15 मई
शान्तिनाथजी जन्म, तप, मोक्ष	15 मई
अजितनाथजी गर्भ	16 मई
अष्टमी तिथि (शु.)	23 मई
चौदस तिथि (शु.)	30 मई
अष्टमी तिथि (कृ.)	8 जून
चौदस तिथि (कृ.)	14 जून
धर्मनाथजी मोक्ष	18 जून
अष्टमी तिथि (शु.)	22 जून
सुपाश्वनाथजी जन्म-तप	26 जून
ज्येष्ठ जिनवार व्रत समाप्त	29 जून
ऋषभदेवजी गर्भ	1 जुलाई
वासुपूज्यजी गर्भ	6 जुलाई
विमलनाथजी मोक्ष, अष्टमी तिथि (कृ.)	8 जुलाई
नमिनाथजी जन्म-तप	10 जुलाई
चौदस तिथि (कृ.)	13 जुलाई
महावीरजी गर्भ	19 जुलाई
नेमिनाथजी मोक्ष	20 जुलाई
अष्टमी तिथि (शु.), अष्टाहिका प्रा.	21 जुलाई
चौदस तिथि (शु.), चतुर्मास आरम्भ	28 जुलाई
अष्टाहिका समाप्त	29 जुलाई
महावीर शासन जयन्ती	30 जुलाई
मुनि सुव्रतनाथजी गर्भ	31 जुलाई
अष्टमी तिथि (कृ.)	6 अगस्त
कुंथुनाथजी गर्भ	8 अगस्त
चौदस तिथि (कृ.)	11 अगस्त
सुमतिनाथजी गर्भ	14 अगस्त
नेमिनाथजी जन्म	18 अगस्त
पार्श्वनाथजी मोक्ष	19 अगस्त
अष्टमी तिथि (शु.)	20 अगस्त
चौदस तिथि (शु.)	26 अगस्त
श्रेयांशनाथजी मोक्ष	28 अगस्त
शान्तिनाथजी गर्भ	3 सितम्बर
श्वे. पर्युषण प्रा.	8 सितम्बर

चौदस तिथि (कृ.)	10 सितम्बर	नेमिनाथजी गर्भ	15 नवम्बर	दशलक्षण प्रा., विमलनाथजी जन्म-तप	10 फरवरी
संवत्सरी महापर्व	11 सितम्बर	अष्टमी तिथि (शु.), अष्टाह्निका प्रा.	17 नवम्बर	विमलनाथजी ज्ञान	12 फरवरी
कल्पसूत्र पाठ	12 सितम्बर	अरहनाथजी ज्ञान	21 नवम्बर	मर्यादा महोत्सव	13 फरवरी
तैलघर तप	13 सितम्बर	चौदस तिथि (शु.)	23 नवम्बर	अष्टमी तिथि (शु.)	14 फरवरी
श्वे. पर्युषण समा.	14 सितम्बर	अष्टाह्निका समा., सम्भवनाथजी जन्म	24 नवम्बर	अजितनाथजी जन्म-तप	16 फरवरी
दिग. दशलक्षण प्रा.	15 सितम्बर	अष्टमी तिथि (कृ.)	1 दिसम्बर	अभिनन्दननाथजी जन्म-तप	18 फरवरी
सुपार्श्वनाथजी गर्भ	17 सितम्बर	महावीरजी तप	3 दिसम्बर	चौदस तिथि (शु.), दशलक्षण समा.	19 फरवरी
अष्टमी तिथि (शु.), पुष्पदन्तजी मोक्ष	19 सितम्बर	चौदस तिथि (कृ.)	7 दिसम्बर	धर्मनाथजी जन्म-तप	19 फरवरी
धूप-सुगन्ध दशमी	21 सितम्बर	पुष्पदन्तजी जन्म, तप	9 दिसम्बर	श्री जीतेन्द्र रथयात्रा	20 फरवरी
रत्नत्रय प्रारम्भ	24 सितम्बर	अष्टमी तिथि (शु.)	17 दिसम्बर	अरहनाथजी गर्भ	23 फरवरी
चौदस तिथि (शु.)	25 सितम्बर	अरहनाथजी तप	19 दिसम्बर	पद्मप्रभुजी मोक्ष	24 फरवरी
दिग. दशलक्षण समा.	25 सितम्बर	मौनी एकादशी	20 दिसम्बर	सुपार्श्वनाथजी ज्ञान	26 फरवरी
वासुपूज्यजी मोक्ष	25 सितम्बर	मल्लिनाथजी जन्म-तप	20 दिसम्बर	चन्द्रप्रभुजी ज्ञान, सुपार्श्वनाथजी मोक्ष	27 फरवरी
रत्नत्रय समाप्त	26 सितम्बर	नेमिनाथजी ज्ञान	20 दिसम्बर	अष्टमी तिथि (कृ.)	28 फरवरी
क्षमावाणी पर्व	27 सितम्बर	अरहनाथजी जन्म	23 दिसम्बर	पुष्पदन्तजी गर्भ	1 मार्च
नेमिनाथजी गर्भ	28 सितम्बर	सम्भवनाथजी तप, चौदस तिथि (शु.)	23 दिसम्बर	ऋषभदेवजी ज्ञान, श्रेयांशनाथजी जन्म-तप	3 मार्च
अष्टमी तिथि (कृ.)	3 अक्टूबर	मल्लिनाथजी ज्ञान	25 दिसम्बर	मुनि सुव्रतनाथजी मोक्ष	4 मार्च
चौदस तिथि (कृ.)	9 अक्टूबर	अष्टमी तिथि (कृ.)	31 दिसम्बर	चौदस तिथि (कृ.), वासुपूज्यजी जन्म-तप	7 मार्च
नेमिनाथजी ज्ञान	11 अक्टूबर	सन् 2027 ई.		मल्लिनाथजी मोक्ष	13 मार्च
आर्यबिल ओली प्रारम्भ	16 अक्टूबर			चन्द्रप्रभुजी मोक्ष, सम्भवनाथजी गर्भ	15 मार्च
अष्टमी तिथि (शु.), शीतलनाथजी मोक्ष	18 अक्टूबर	चन्द्रप्रभुजी जन्म-तप, पार्श्वनाथजी तप	3 जनवरी	अष्टाह्निका प्रारम्भ	15 मार्च
चौदस तिथि (शु.)	25 अक्टूबर	चौदस तिथि (कृ.), शीतलनाथजी ज्ञान	6 जनवरी	चौदस तिथि (शु.)	21 मार्च
आर्यबिल ओली समाप्त	26 अक्टूबर	यतेन्द्र सुरेश्वर दिवस त्रिस्तुति	10 जनवरी	अष्टाह्निका समाप्त	22 मार्च
अनन्तनाथजी गर्भ	26 अक्टूबर	श्री राजेन्द्र सुरेश्वर दिवस	15 जनवरी	पार्श्वनाथजी ज्ञान	26 मार्च
सम्भवनाथजी ज्ञान	29 अक्टूबर	अष्टमी तिथि (शु.)	16 जनवरी	चन्द्रप्रभुजी गर्भ	27 मार्च
अष्टमी तिथि (कृ.)	2 नवम्बर	शान्तिनाथजी ज्ञान, अजितनाथजी ज्ञान	18 जनवरी	अष्टमी तिथि (कृ.), शीतलनाथजी गर्भ	30 मार्च
चतुर्मास्य समा., पद्मप्रभुजी जन्म-तप	7 नवम्बर	चौदस तिथि (शु.), अभिनन्दननाथजी ज्ञान	21 जनवरी	ऋषभदेवजी जन्म, ऋषभदेवजी तप	31 मार्च
चौदस तिथि (कृ.)	8 नवम्बर	धर्मनाथजी ज्ञान	22 जनवरी	चौदस तिथि (कृ.)	5 अप्रैल
महावीरजी मोक्ष	9 नवम्बर	पद्मप्रभुजी गर्भ	27 जनवरी	अरहनाथजी मोक्ष, अनन्तनाथजी ज्ञान	6 अप्रैल
जैन सम्बत् प्रारम्भ	10 नवम्बर	अष्टमी तिथि (कृ.)	29 जनवरी	अनन्तनाथजी मोक्ष, ज्ञान	6 अप्रैल
पुष्पदन्तजी ज्ञान	11 नवम्बर	शीतलनाथजी जन्म-तप	3 फरवरी	मल्लिनाथजी गर्भ	7 अप्रैल
ज्ञान पंचमी	14 नवम्बर	चौदस तिथि (कृ.), ऋषभदेवजी मोक्ष	5 फरवरी	कुंथुनाथजी ज्ञान	9 अप्रैल
		श्रेयांशनाथजी ज्ञान	6 फरवरी	दशलक्षण प्रारम्भ	10 अप्रैल
		वासुपूज्यजी ज्ञान	8 फरवरी		

जयंतियाँ सन् 2026-27 ई.

सन् 2026 ई.

लालबहादुर शास्त्री पुण्य दिवस	11 जनवरी शनि
शाकम्भरी जयन्ती	3 जनवरी शुक्र
रामानन्दाचार्य जयन्ती	9 जन. गुरु
विवेकानन्द जयन्ती	9 जन. गुरु
बाबा लाल दयाल जयन्ती	20 जन. सोम
सुभाष जयन्ती	23 जन. गुरु
लाजपतराय जयन्ती	28 जन. मंगल
श्रीराम चरण स्नेही जयन्ती	31 जन. शुक्र
ललिता जयन्ती, रविदास जयन्ती	1 फर. शनि
रामदास जयन्ती	11 फर. मंगल
दयानन्द सरस्वती जयन्ती	12 फर. बुध
वैद्यनाथ जयन्ती	15 फर. शनि
रा.कृ.परमहंस जयन्ती	19 फर. बुध
शिवाजी जयन्ती	19 फर. बुध
याज्ञवल्क्य जयन्ती	22 फर. शनि
दादुदयाल जयन्ती	24 फर. सोम
चौ. महाप्रभु जयन्ती	3 मार्च सोम
सन्त तुकाराम जयन्ती	5 मार्च बुध
गौतम जयन्ती	19 मार्च बुध
झूलेलाल जयन्ती	20 मार्च गुरु
मत्स्य जयन्ती	21 मार्च शुक्र
मां तारा जयन्ती	26 मार्च बुध
श्रीराम जयन्ती	26 मार्च बुध
हनुमान् जयन्ती	2 अप्रैल बुध
अनुसुइया जयन्ती	6 अप्रैल रवि
बल्लभाचार्य जयन्ती	13 अप्रैल रवि
शुकदेव जयन्ती	17 अप्रैल गुरु
परशुराम जयन्ती	19 अप्रैल शनि
मातंगी जयन्ती	20 अप्रैल रवि

शंकराचार्य जयन्ती	21 अप्रैल सोम
सूरदास जयन्ती	21 अप्रैल सोम
रामानुजाचार्य जयन्ती	22 अप्रैल मंगल
गंगा जयन्ती	23 अप्रैल बुध
बगलामुखी जयन्ती	24 अप्रैल गुरु
जानकी जयन्ती	25 अप्रैल शुक्र
हरिवंश महाप्रभु जयन्ती	27 अप्रैल रवि
नरसिंह जयन्ती	30 अप्रैल बुध
कूर्म जयन्ती	1 मई गुरु
बुद्ध जयन्ती	1 मई गुरु
छिन्नमस्ता जयन्ती	1 मई गुरु
नारद जयन्ती	2 मई शुक्र
मां आनन्दमयी जयन्ती	4 मई रवि
टैगोर जयन्ती	7 मई बुध
शनैश्चर जयन्ती	16 मई शुक्र
महाप्रभु प्रताप जयन्ती	17 जून मंगल
धूम्रपाती जयन्ती	22 जून रवि
बाल गंगाधर तिलक	23 जुला बुध
सरस माधुरी जयन्ती	12 अग. मंगल
कल्की जयन्ती	18 अग. सोम
तुलसीदास जयन्ती	19 अग. मंगल
हयग्रीव जयन्ती	27 अग. बुध
गायत्री जयन्ती	28 अग. गुरु
श्रीकृष्ण जयन्ती	3 सित. बुध
ज्ञानेश्वर जयन्ती	4 सित. गुरु
मां काली जयन्ती	5 सित. शुक्र
वराह जयन्ती	13 सित. शनि
दधीची जयन्ती	19 सित. शुक्र
भागवत जयन्ती	20 सित. शनि
वामन जयन्ती	23 सित. मंगल
भुवनेश्वरी जयन्ती	23 सित. मंगल
महात्मा गांधी जयन्ती	2 अक्टू. गुरु
लालबहादुर शास्त्री जयन्ती	2 अक्टू. गुरु

कात्यायनी जयन्ती	9 अक्टू. गुरु
अग्रसेन जयन्ती	11 अक्टू. शनि
माधवाचार्य जयन्ती	21 अक्टू. मंगल
बाल्मीकी जयन्ती	26 अक्टू. रवि
सरदार पटेल जयन्ती	31 अक्टू. शुक्र
हनुमान् जयन्ती	7 नव. शुक्र
कमला जयन्ती	8 नव. शनि
बालदिवस, नेहरु जयन्ती	14 नव. शुक्र
सहस्र अर्जुन जयन्ती	16 नव. रवि
इन्दिरा गांधी जन्म दिवस	19 नव. बुध
कालीदास जयन्ती	21 नव. शुक्र
राजेन्द्र प्रसाद जयन्ती	3 दिस. बुध
बालाजी जयन्ती	7 दिस. रवि
गीता जयन्ती	20 दिस. शनि
शो. त्रिपुर जयन्ती, अन्नपूर्णा जयन्ती	23 दिस. मंगल
दत्तात्रेय जयन्ती	23 दिस. मंगल
मदनमोहन मालवीय जयन्ती	25 दिस. गुरु
पं. मदनमोहन मालवीय जय.	25 दिस. गुरु

सन् 2027 ई.

शाकम्भरी जयन्ती	22 जन. गुरु
सुभाष जयन्ती	23 जन. शुक्र
लाजपत राय जयन्ती	28 जन. बुध
रामानन्दाचार्य जयन्ती	28 जन. बुध
विवेकानन्द जयन्ती	28 जन. बुध
बाबा लाल दयाल जयन्ती	8 फर. रवि
ललिता जयन्ती	20 फर. शुक्र
रविदास जयन्ती	20 फर. शुक्र
श्रीराम चरण स्नेही जयन्ती	20 फर. शुक्र
रामदास जयन्ती	1 मार्च रवि
दयानन्द सरस्वती जयन्ती	2 मार्च सोम
वैद्यनाथ जयन्ती	6 मार्च शुक्र
रामकृष्ण परमहंस जयन्ती	10 मार्च मंगल
याज्ञवल्क्य जयन्ती	13 मार्च शुक्र

दादुदयाल जयन्ती	16 मार्च सोम
चौतन्य महाप्रभु जयन्ती	22 मार्च रवि
तुकाराम जयन्ती	24 मार्च मंगल
गौतम जयन्ती	7 अप्रैल रवि

दशावतार जयंतियाँ

सन् 2026 ई.

श्री मत्स्यावतार जयंती	21 मार्च
श्री रामावतार जयंती	27 मार्च
श्री परशुराम जयंती	20 अप्रैल
श्री नृसिंहावतार जयंती	29 अप्रैल
श्री कूर्मावतार जयंती	30 अप्रैल
श्री बुद्धावतार जयंती	1 मई
श्री कल्कि अवतार जयंती	18 अगस्त
श्री कृष्णावतार जयंती	4 सितम्बर
श्री वाराहावतार जयंती	7 सितम्बर
श्री वामनावतार जयंती	23 सितम्बर

श्रीकुलदेव बाबा जैलख देव जी ठठर रायपुर, जम्मू के स्थायी कार्यक्रम

मेल सेठ ब्राह्मण बिरादरी
(14 अप्रैल 2026)

मेल फबा महाजन बिरादरी - बुद्धपूर्णिमा
(1 मई 2026)

मुण्डन मुहूर्त सेठ बिरादरी
वैशाख कृष्ण पक्ष चतुर्दशी
(16 अप्रैल 2026)

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष चतुर्दशी
(7 दिसम्बर 2026)

मुस्लिम त्यौहार

सन् 2026 ई.

जन्म श्री हजरत अली	4 जनवरी
शबे-मिराज	18 जनवरी
शब-ए-बरात	6 फरवरी
रोजे शुरू	20 फरवरी
शहादत-ए-हजरत अली	12 मार्च
शबे-कदर	18 मार्च
जमातुलविदा	19 मार्च
ईद-उल-फितर (मीठी)	22 मार्च
हज शुरू	18 मई
ईदुलजुहा (बकरीद)	27 मई
हज समाप्त	30 मई
मुहर्रम	26 जून
मुहर्रम (ताजिया)	27 जून
चेहलुम	26 जुलाई
आखरी चहार, शम्बा	12 अगस्त
शहादते-इमामहसन	13 अगस्त
मिलादेउस नबी, बारा वफात	26 अगस्त
पैगम्बर साहब का जन्म	26 अगस्त
ईदे-मौलाद	31 अगस्त
फतेह यजदाम्म	24 सितम्बर
जन्म हजरत अली	23 दिसम्बर

सन् 2027 ई.

शबे-मिराज	6 जनवरी
शब-ए-बरात	24 फरवरी
शहादत-ए-हजरत अली	28 फरवरी
शब-ए-कदर	6 मार्च
ईद-उल-फितर (मीठी ईद)	10 मार्च
जमातुल विदा	26 मार्च

क्रिश्चियन त्यौहार

सन् 2026 ई.

New Year	1 January
Epiphany	6 January
Septuagesima, Sunday	1 February
Quinquagesima, Sunday	15 February
Ash Wednesday	18 February
Palm Sunday	29 March
Good Friday	3 April
Easter Holy Sunday	5 April
Low Sunday	12 April
Rogation Sunday	10 May
Holy Thursday (Ascension Day)	14 May
Whit Sunday	24 May
Trinity Sunday	31 May
Corpus Cristi (Thursday)	4 June
First Sunday (In Advent)	29 November
Christmas Day	25 December

शुभकार्यो में विवर्जित काल राहुकाल

रविवार	: सायं 4:30 से 6:00 तक
सोमवार	: प्रातः 7:30 से 9:00 तक
मंगलवार	: दोपहर 3:00 से 4:30 तक
बुधवार	: दोपहर 12:00 से 1:30 तक
वृहस्पतिवार	: दोपहर 1:30 से 3:00 तक
शुक्रवार	: दिवा 10:30 से दो. 12:00 तक
शनि	: प्रातः 9:00 से 10:30 तक

निरयण संक्रान्ति प्रवेश एवं पुण्यकाल – सन् 2026-27 ई.				श्री कुलदेव रैणा विरादरी सूज्जवां जम्मू के स्थायी कार्यक्रम	
नाम संक्रान्ति	ता. मास. वार	प्रवेशकाल	पुण्यकाल विवरण	देवमूर्तियों का स्थापना दिवस (सोमवार, 27 अप्रैल 2026)	
वैशाख संक्रान्ति	14 अप्रैल	प्रातः 9:30	प्रातः 06:06 से दिवा 1:55 तक	गुग्गा नवमी – मेल रैणा विरादरी, सूज्जवां जम्मू (शनिवार, 5 सितम्बर 2026)	
ज्येष्ठ संक्रान्ति	15 मई	प्रातः 6:20	प्रातः 5:36 से सायं 6:28 तक	कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा – मेल रैणा विरादरी, सूज्जवां, जम्मू (मंगलवार, 24 नवम्बर 2026)	
आषाढ़ संक्रान्ति	15 जून	दोपहर 12:51	दोपहर 1:00 से सायं 7:35 तक	मल्ल माता स्थापना दिवस (मंगलवार, 19 जनवरी, 2027)	
श्रावण संक्रान्ति	16 जुलाई	रात्रि 11:38	मध्याह्न 12:27 से सायं 7:34 तक		
भाद्रपद संक्रान्ति	17 अगस्त	प्रातः 07:57	प्रातः 5:59 से 8:05 तक (महापुष्यकाल)		
आश्विन संक्रान्ति	17 सितम्बर	प्रातः 07:51	प्रातः 7:51 से दिवा 2:32 तक		
कार्तिक संक्रान्ति	17 अक्टूबर	रात्रि 07:50	दोपहर 12:07 से सायं 5:51 तक		
मार्गशीर्ष संक्रान्ति	16 नवम्बर	रात्रि 07:41	दोपहर 12:06 से सायं 5:24 तक		
पौष संक्रान्ति	16 दिसम्बर	दिवा 10:23	दिवा 10:30 से सायं 5:21 तक		
माघ संक्रान्ति	14 जनवरी सन् 2027 ई.	रात्रि 09:08	प्रातः 7:15 से सायं 5:41 तक		
फाल्गुन संक्रान्ति	13 फरवरी	दिवा 10:07	प्रातः 7:20 से 10:15 तक		
चैत्र संक्रान्ति	15 मार्च	प्रातः 06:58	प्रातः 6:45 से दिवा 1:10 तक		

सिक्ख गुरुपर्व सन् 2026-27 ई०						
नाम गुरु साहेबान	प्राचीन परम्परा अनुसार			नानकशाही कलैण्डर अनुसार		
	जन्मदिन	गुरयाई	ज्योतिज्योत	जन्मदिन	गुरयाई	ज्योतिज्योत
श्री गुरु नानकदेवजी	कार्तिक पूर्णिमा 24 नव.	-	आश्विन कृ. दशमी 5 अक्टूबर	08 नव.	प्रकाश दिवस से	22 सितम्बर
श्री गुरु अंगद देवजी	वैशाख शु. प्रतिपदा 18 अप्रैल	आश्विन कृ. पंचमी 1 अक्टू	चैत्र शु. चतुर्थी 22 मार्च	18 अप्रैल	18 सित.	16 अप्रैल
श्री गुरु अमरदासजी	वैशाख शु. चतुर्दशी 30 अप्रैल	चैत्र शु. प्रतिपदा 19 मार्च	भाद्र पूर्णिमा 26 सितम्बर	23 मई	16 अप्रैल	16 सितम्बर
श्री गुरु रामदासजी	कार्तिक कृ. द्वितीया 27 अक्टू	भाद्र शु. त्रयोदशी 24 सित.	भाद्र शु. तृतीया 14 सितम्बर	09 अक्टू.	16 सित	16 सितम्बर
श्री गुरु अर्जुनदेवजी	वैशाख कृ. सप्तमी 9 अप्रैल	भाद्र शु. द्वितीया 13 सित.	ज्येष्ठ शु. चतुर्थी 18 जून	02 मई	16 सित	16 जून
श्री गुरु हरगोविन्दजी	आषाढ़ कृ. प्रतिपदा 1 जुलाई	ज्ये. कृ. अष्टमी 10 मई	चैत्र शु. पंचमी 23 मार्च	05 जुलाई	11 जून	14 मार्च
श्री गुरु हरिरायजी	माघ शु. त्रयोदशी 31 जनवरी	चैत्र कृ. त्रयोदशी 17 मार्च	कार्तिक कृ. नवमी 3 नवम्बर	31 जनवरी	14 मार्च	20 अक्टूबर
श्री गुरु हरकिशनजी	श्रावण कृ. नवमी 7 अगस्त	कार्तिक कृ. नवमी 3 नवम्बर	चैत्र शु. चतुर्दशी 1 अप्रैल	23 जुलाई	20 अक्टू.	16 अप्रैल
श्री गुरु तेगबहादुरजी	वैशाख कृ. पंचमी 7 अप्रैल	चैत्र शु. चतुर्दशी 1 अप्रैल	मसर्ग. शु. पंचमी 14 दिसम्बर	21 अप्रैल	16 अप्रैल	24 नवम्बर
श्री गुरु गोविन्द सिंहजी	पौष शु. सप्तमी 15 जन. 27	मार्ग. शु. तृतीया 12 दिस	कार्तिक शु. पंचमी 14 नवम्बर	05 जनवरी	24 नवम्बर	21 अक्टूबर
श्री गुरुग्रन्थ साहिब प्रथम प्रकाश	1 सितम्बर			01 सितम्बर		
श्री गुरुग्रन्थ साहिब को गुरयाई मिली (नांदेड़) खालसा पंथ सजाना दिवस		20 अक्टू.	13 अप्रैल		20 अक्टूबर	13 अप्रैल

सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, गुरु पुष्य आदि योग वि. सवंत् 2083 (सन् 2026-27 ई.)

दैनिक जीवन में किये जाने वाले महत्वपूर्ण कार्यों के लिये शुभ मुहूर्त का अभाव होने पर अथवा शुभ मुहूर्तों की प्रतीक्षा में अधिक दिन न रुके जाने पर निम्न सुयोग बाले मुहूर्तों - **सर्वार्थ सिद्धि योग, अमृत सिद्धि योग, यमघण्ट योग, राजप्रद योग, द्विपुष्कर योग, त्रिपुष्कर योग** - को सरलता से ग्रहण किया जा सकता है। सभी योगों का प्रारम्भ व समाप्ति काल अंग्रेजी तारीख के अनुसार भा.स्टै.टा. में दिया गया है। इन योगों के समय में जो भी कार्य किये जायेंगे वह सफल होंगे। शुभ योगों में किये गये शुभ कार्य सिद्धिप्रद होते हैं। किन्तु द्विपुष्कर तथा त्रिपुष्कर योगों में घटित होने वाले शुभ व अशुभ- दोनों ही प्रकार के योगों में किये गये कार्यों का द्विगुण व त्रिगुण फल प्राप्त होता है। इनमें यदि मृत्यु हो तो विधिवत शांति करवानी आवश्यक रहती है।

सर्वार्थ सिद्धि योग: यात्रा, गृह प्रवेश, नूतन कार्यारम्भ आदि सभी कार्यों के लिये अथवा अन्य किसी अपरिहार्य कारणवश व्यतिपात, वैधृति, गुरु-शुक्रास्त, अधिक मास एवं वेध आदि का विचार सम्भव न हो तो सर्वार्थ सिद्धि योगों का आश्रय लेना चाहिये। यदि इस योग में रविवार को अश्विनी, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त तथा मूल नक्षत्रों में से कोई एक नक्षत्र पड़ जाये तो उस योग काल तक सर्वार्थसिद्धि का शुभ मुहूर्त होगा परन्तु इस बीच शुक्ल अथवा कृष्ण प्रतिपदा, तृतीय, सप्तमी में से कोई तिथि आ जाये तो सर्वार्थ सिद्धि योग दूषित हो जाता है।

अमृतसिद्धि योग: प्रेम विवाह करना, विदेश यात्रा, किसी कार्य हेतु सुकाम अनुष्ठान करना आदि कार्य इस योग में किये जा सकते हैं। यदि किसी एक ही अमृतसिद्धियोग तथा सिद्धि योग एक साथ पड़ जाये तो वह दिन दुष्ट हो जाता है यात्रा के लिये अनपयुक्त होता है।

रविपुष्य योग : इस योग में जड़ी बूटी तोड़ना, जोड़कर औषधि तैयार करना, किसी विशेष रोग में रोगी को औषधि देना शुभ होता है।

गुरुपुष्य योग: इस योग में गुरु या पिता, दादा, श्रेष्ठ व्यक्ति से मन्त्र, तन्त्र अथवा किसी विशिष्ट विषय के सम्बन्ध में उच्च शिक्षा प्राप्त करना, धन, विद्या, भूमि, आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करना, कोई धार्मिक अनुष्ठान प्रारम्भ करना, गुरु धारण करना, विदेश यात्रा करना शुभ होता है परन्तु इस योग में विवाह करना सर्वथा त्याज्य है।

रवियोग: उपरोक्त सभी योगों की भांति रवियोग भी सभी कार्यों के लिये शुभ है। शास्त्रों का वचन है कि जिस प्रकार हिमालय का हिम, सूर्य उगने पर गल जाता है, सैकड़ों हाथियों के झुंड को अकेला सिंह भगा देता है, उसी प्रकार रवि योग सभी अशुभ योगों को भगा देता है। तात्पर्य कि इस योग में सभी कार्य निर्विघ्न रूप से पूर्ण होते हैं।

त्रिपुष्कर तथा द्विपुष्कर योग : यद्यपि पूर्वोक्त शुभ योगों में जमीन, हीरे, बहुमूल्य रत्न, हीरे, जवाहरात, आभूषण, कार, ट्रक, ट्रैक्टर, घोड़ा आदि वाहन, टेलीविजन, भैंस, गाय आदि दुधारु पशु खरीदे जा सकते हैं तथापि इसके लिये त्रिपुष्कर तथा द्विपुष्कर योग अधिक उपयुक्त तथा महत्वपूर्ण माने जाते हैं। कोई वस्तु यदि त्रिपुष्कर योग में क्रय की जाय तो वह निकट भविष्य में तीन गुनी तथा द्विपुष्कर योग में दो गुनी हो जाती है। अतः इन योगों में बहुमूल्य वस्तुयें खरीदनी चाहिये, बैंक में जमा कराना चाहिये। परन्तु इन योगों में मुकदमा दायर करना, औषधी खरीदना अच्छा नहीं होता, कीमती वस्तुओं को बेचना भी अच्छा नहीं होता, अन्यथा भविष्य में तीनगुनी अथवा दोगुनी बेचने की स्थिति बनती है।

निम्नांकित शुभ योगों में किये गये शुभ कार्य सिद्धिप्रद होते हैं। किन्तु द्विपुष्कर तथा त्रिपुष्कर योगों में घटित होने वाले शुभ व अशुभ- दोनों ही प्रकार के योगों में किये गये कार्य द्विगुण व त्रिगुण फलप्रद होते हैं। अतः इनमें यदि मृत्यु हो तो विधिवत शांति करवानी आवश्यक रहती है। यहां सभी योगों का प्रारम्भ व समाप्ति काल अंग्रेजी तारीख के अनुसार भा.स्टै.टा. में दिया गया है।

प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त	
ता.मास	घ.मि.	ता.मास	घ.मि.	ता.मास	घ.मि.	ता.मास	घ.मि.
सर्वार्थ सिद्धि योग सन् 2026 ई.				04 अप्रै	06:08	04 अप्रै	21:35
27 फर	10:49	27 फर	30:48	06 अप्रै	06:06	06 अप्रै	26:57
01 मार्च	06:47	01 मार्च	08:34	11 अप्रै	13:40	11 अप्रै	29:59
07 मार्च	11:15	07 मार्च	30:39	16 अप्रै	13:59	16 अप्रै	29:54
09 मार्च	16:11	09 मार्च	30:37	17 अप्रै	05:54	17 अप्रै	29:53
14 मार्च	28:49	14 मार्च	30:31	20 अप्रै	05:51	20 अप्रै	29:50
19 मार्च	28:05	19 मार्च	30:26	23 अप्रै	05:48	23 अप्रै	29:47
20 मार्च	06:26	20 मार्च	30:24	29 अप्रै	05:43	29 अप्रै	24:16
23 मार्च	20:49	23 मार्च	30:21	04 मई	05:38	04 मई	09:58
25 मार्च	06:32	25 मार्च	17:33	08 मई	21:20	08 मई	29:35
26 मार्च	16:19	26 मार्च	30:17	09 मई	05:35	09 मई	23:25
27 मार्च	06:17	27 मार्च	15:24	14 मई	05:31	14 मई	29:31
01 अप्रै	16:17	01 अप्रै	30:11	15 मई	05:31	15 मई	20:15

चन्द्रमा का नक्षत्र चरण प्रवेश वर्ष सन् 2026-27 ई.

नक्षत्र	तारीख	समय	नक्षत्र	तारीख	समय	नक्षत्र	तारीख	समय	नक्षत्र	तारीख	समय
	अप्रैल 2026		26 मार्च	आर्द्रा-4	10:36	02 अप्रैल	चित्रा-1	17:39	10 अप्रैल	उत्तराषाढ -2	18:04
20 मार्च	रेवती-1	04:05	26 मार्च	पुनर्वसु-1	16:19	03 अप्रैल	चित्रा-2	00:03	11 अप्रैल	उत्तराषाढ-3	00:38
20 मार्च	रेवती-2	09:42	26 मार्च	पुनर्वसु-2	22:03	03 अप्रैल	चित्रा-3	06:29	11 अप्रैल	उत्तराषाढ -4	07:10
20 मार्च	रेवती-3	15:18	27 मार्च	पुनर्वसु-3	03:49	03 अप्रैल	चित्रा-4	12:56	11 अप्रैल	श्रवण-1	13:40
20 मार्च	रेवती-4	20:53	27 मार्च	पुनर्वसु-4	09:36	03 अप्रैल	स्वाति-1	19:25	11 अप्रैल	श्रवण-2	20:07
21 मार्च	अश्विनी-1	02:28	27 मार्च	पुष्य-1	15:24	04 अप्रैल	स्वाति-2	01:55	12 अप्रैल	श्रवण-3	02:32
21 मार्च	अश्विनी-2	08:01	27 मार्च	पुष्य-2	21:14	04 अप्रैल	स्वाति-3	08:27	12 अप्रैल	श्रवण-4	08:54
21 मार्च	अश्विनी-3	13:34	28 मार्च	पुष्य-3	03:04	04 अप्रैल	स्वाति-4	15:01	12 अप्रैल	धनिष्ठा-1	15:14
21 मार्च	अश्विनी-4	19:06	28 मार्च	पुष्य-4	08:57	04 अप्रैल	विशाखा-1	21:35	12 अप्रैल	धनिष्ठा-2	21:31
22 मार्च	भरणी-1	00:38	28 मार्च	आश्लेषा-1	14:50	05 अप्रैल	विशाखा-2	04:12	13 अप्रैल	धनिष्ठा-3	03:45
22 मार्च	भरणी-2	06:09	28 मार्च	आश्लेषा-2	20:45	05 अप्रैल	विशाखा-3	10:49	13 अप्रैल	धनिष्ठा-4	09:56
22 मार्च	भरणी-3	11:40	29 मार्च	आश्लेषा-3	02:41	05 अप्रैल	विशाखा-4	17:28	13 अप्रैल	शतभिषा-1	16:03
22 मार्च	भरणी-4	17:11	29 मार्च	आश्लेषा-4	08:39	06 अप्रैल	अनुराधा-1	00:08	13 अप्रैल	शतभिषा-2	22:09
22 मार्च	कृतिका-1	22:43	29 मार्च	मघा-1	14:38	06 अप्रैल	अनुराधा-2	06:49	14 अप्रैल	शतभिषा-3	04:11
23 मार्च	कृतिका-2	04:14	29 मार्च	मघा-2	20:38	06 अप्रैल	अनुराधा-3	13:30	14 अप्रैल	शतभिषा-4	10:10
23 मार्च	कृतिका-3	09:45	30 मार्च	मघा-3	02:40	06 अप्रैल	अनुराधा-4	20:13	14 अप्रैल	पू. भाद्रपद-1	16:06
23 मार्च	कृतिका-4	15:17	30 मार्च	मघा-4	08:43	07 अप्रैल	ज्येष्ठा-1	02:57	14 अप्रैल	पू. भाद्रपद-2	21:59
23 मार्च	रोहिणी-1	20:49	30 मार्च	पू. फाल्गुनी-1	14:48	07 अप्रैल	ज्येष्ठा-2	09:40	15 अप्रैल	पू. भाद्रपद-3	03:50
24 मार्च	रोहिणी-2	02:22	30 मार्च	पू. फाल्गुनी-2	20:54	07 अप्रैल	ज्येष्ठा-3	16:25	15 अप्रैल	पू. भाद्रपद-4	09:37
24 मार्च	रोहिणी-3	07:56	31 मार्च	पू. फाल्गुनी-3	03:01	07 अप्रैल	ज्येष्ठा-4	23:09	15 अप्रैल	उ. भाद्रपद-1	15:23
24 मार्च	रोहिणी-4	13:30	31 मार्च	पू. फाल्गुनी-4	09:10	08 अप्रैल	मूल-1	05:54	15 अप्रैल	उ. भाद्रपद-2	21:05
24 मार्च	मृगशिरा-1	19:05	31 मार्च	उ. फाल्गुनी-1	15:21	08 अप्रैल	मूल-2	12:38	16 अप्रैल	उ. भाद्रपद-3	02:45
25 मार्च	मृगशिरा-2	00:40	31 मार्च	उ. फाल्गुनी-2	21:33	08 अप्रैल	मूल-3	19:22	16 अप्रैल	उ. भाद्रपद-4	08:23
25 मार्च	मृगशिरा-3	06:17	01 अप्रैल	उ. फाल्गुनी-3	03:46	09 अप्रैल	मूल-4	02:06	16 अप्रैल	रेवती-1	13:59
25 मार्च	मृगशिरा-4	11:55	01 अप्रैल	उ. फाल्गुनी-4	10:01	09 अप्रैल	पूर्वाषाढ -1	08:48	16 अप्रैल	रेवती-2	19:32
25 मार्च	आर्द्रा-1	17:33	01 अप्रैल	हस्त-1	16:17	09 अप्रैल	पूर्वाषाढ -2	15:30	17 अप्रैल	रेवती-3	01:04
25 मार्च	आर्द्रा-2	23:13	01 अप्रैल	हस्त-2	22:35	09 अप्रैल	पूर्वाषाढ-3	22:11	17 अप्रैल	रेवती-4	06:34
26 मार्च	आर्द्रा-3	04:54	02 अप्रैल	हस्त-3	04:55	10 अप्रैल	पूर्वाषाढ -4	04:50	17 अप्रैल	अश्विनी-1	12:02
			02 अप्रैल	हस्त-4	11:16	10 अप्रैल	उत्तराषाढ -1	11:28	17 अप्रैल	अश्विनी-2	17:29

राजा मन्त्री आदि का विवरण

ॐ श्री गणेशाय नमः

अथास्मिन् वर्षे सृष्टितो गताब्दाः १९५५८८५१२७, तत्र कृतयुगप्रमाणम् १७२८०००, त्रेतायुगप्रमाणम् १२९६०००, द्वापुरयुगप्रमाणम् ८६४०००, कलियुगप्रमाणम् ४३२०००, तन्मध्ये गतकलिः ५१२७, भोग्यकलिः ४२६८७३, अथास्मिन् संवत्सरे श्रीमन्नुपतिवीर-विक्रमादित्यराज्यतो गताब्दाः संवत् २०८३, शाकः १९४८, अथास्मिन् वर्षे राजा गुरुः। मन्त्री भौमः। सस्येशः गुरुः। धान्येशो बुधः। मेघेशोः चन्द्रः। रसेशः शनिः। नीरसेशः गुरुः। फलेशः रविः। घनेशः गुरुः। दुर्गेशः चन्द्रः। एतेदशाधिकारिणाः। तत्र बार्हस्पत्यमानेन प्रभवादि षष्ट्यब्दानां मध्ये रुद्रविंशतिकायां १४ रौद्र नाम संवत्सरः प्रवर्तते। तस्य मेघाऽर्कसमये गतमासादिः १/२२/५३/४६/३६, भोग्यमासादिः १०/०७/०६/१३/१४ नासत्यदैवतं युगांतत्रवर्षनाम पौषः। मेघनाम पुष्करः। रोहिणी निवासः समुद्रः। समयनिवासो मालाकारगृहः। समय विश्वा १८ समयवाहनम् दुर्गः। स्तंभाः १ जलस्य। सोमवत्यमा २, सोमवती पञ्चमी ३, अंगारकी चतुर्थी २, धान्यसमी २, बुधाष्टमीनास्ति, रविदशमी १, समय मुहूर्ताः ३४५, समयदिनानि ३८३, तिथिक्षयः १८, तिथिवृद्धिः ११, उत्पत्तिविश्वा ९९, खपति विश्वा १२६, उपविश्व १७, धान्यम् ११, तृणम् ०५, शीतम् १३, तेजः १७, वायुः १३, वृद्धिः १५, क्षयः १५, विग्रहः ११, ऐक्यम् ११७, शनिदृष्टिरुत्तरे। सत्यम् १ $\frac{१}{३}$, धर्म १ $\frac{१}{३}$, पापं १८, ग्रहणऽभावः।

राजा मन्त्री आदि का शास्त्रोक्त निर्णय

चैत्रस्य शुक्लप्रतिपत्तिथौ यो वारः स उक्तो नृपतिस्तदाब्दे।
मेघप्रवेशे किल भास्करस्य यस्मिन्दिने स्यात्स तु राजमन्त्री॥
कर्कसंक्रान्तेर्यो वारः स अग्रधान्येश्वरः।
धनसंक्रान्तेर्यो वारः स पश्चिमधान्येश्वरः॥
कर्कप्रवेशे दिनपस्य उक्तं सस्यस्य नाथो मुनिभिः पुराणैः।
आर्द्राप्रवेशे दिननाथ उक्तो मेघाधिपः प्रोक्तनविप्रवर्यैः॥
सिंहसंक्रान्तिवारेशो दुर्गेशः परिकीर्तितः।
कन्यासंक्रान्तिदिनपो धनेशः परिकीर्तितः॥
तुलाप्रवेशेऽहनि यस्य वारो रसाधिपोऽयं नियतः प्रदिष्टः।
चापप्रवेशे दिवसाधिनाथे धान्याधिपो वै कथितो मुनीन्द्रैः॥
नक्रसंक्रान्तिवारेशो नीरसेशः प्रकीर्तितः।
मीनसंक्रान्तिदिनपः फलेशः परिकीर्तितः॥

‘रौद्र’ नामक संवत्सर का फल

रौद्रब्देनृप सभूतक्षोभक्लेश समन्विते।

सततं त्वखिलालोकामध्यसस्यार्धवृष्ट्यः॥ (वर्ष प्रबोध)

युद्धयन्ति क्षितिपतयः परस्परं हन्तुमुद्यतासर्वे।

कोंकणदेश क्षितिपति निधनं तत्रैव रौद्राब्दे॥ (वृ.व. संहिता)

अन्योन्यं नृपसंक्षोभं चौरव्याघ्रादिभिर्जयम्।

मध्यवृष्टिरनर्घत्वं रौद्राब्देनैव गुर्जरैः॥ (ना.सं. 3/70)

रौद्राब्दे नृपसङ्क्षोभसम्भूतत क्लेशभागिनः।

सततं त्वखिलालोकामध्यसस्यार्धवृष्ट्यः॥ (कश्यपसंहिता 11/65)

रौद्र नामक वर्ष में क्षोभ हो तथा जनता क्लेश सज्युक्त रहे और अन्न जल मध्यम हो, वसिष्ठ ऋषि के अनुसार रौद्रनाम संवत्सर में कोंकण नरेश का निधन तथा समस्त भूपति परस्पर युद्ध करें। सभी एक दूसरे को मारने के लिए उद्यत रहें। कश्यप ऋषि के अनुसार रौद्रसंवत्सर में राजाओं के क्षुब्ध होने से निरन्तर प्रजा दुःखी रहे। अन्न एवं वृष्टि मध्यम हो। नारद संहिता के अनुसार रौद्रनामक संवत्सर में क्षोभ, चोर व्याघ्रादि भय, मध्यम वृष्टि तथा महंगाई अधिक हो किन्तु गुजरात में ऐसा नहीं होगा अर्थात् शुभ फलादेश होगा।

रौद्रनाम संवत्सर में राजाओं में परस्पर मतभेद, युद्ध के लिए तत्परता, प्रजा दुःखी रहे, नये-नये रोगों की उत्पत्ति, भूकम्प, प्राकृतिक आपदाओं से भयंकर कष्ट हो।

1. राजा गुरु का फल

गुरौनृपेवर्षति कामदं जलं महीतले कामदुधाश्चधेनवः।

यजन्ति विप्रा वहवोऽग्नि होत्रिणो महोत्सवः सर्वजनेषुवर्तते॥

वृहस्पति राजा हो तो उपयोगी वर्षा अवश्य हो, गायें दूध प्रचुर मात्रा में दें, वैदिक विद्वान ब्राह्मण होम यज्ञादि में निरत रहें और सब लोगों में बड़े-बड़े उत्सव होते रहें।

व्रत परिचय विक्रमी संवत् 2083 (सन् 2026-27 ई.)

श्री प्रवीन कुमार जैन - जीवन परिचय



प्रवीन कुमार जैन

जातक तत्त्व के तृतीय विवेक के श्लोक 66 में महादेव पाठक ने बताया है कि यदि 'दशमेश का नवांशेश बुध हो तो जातक साहित्यिक गतिविधियों सम्बन्धित लेखक, अनुवादक, एकाउन्टेन्ट, ज्योतिषी, अध्यापक, गणितज्ञ, वकील तथा पुस्तक विक्रेता की वृत्ति अपनाता है।' कन्या लग्न, श्रवण नक्षत्र, मकर राशि में जन्मे सुप्रसिद्ध ज्योतिर्विद श्री प्रवीन कुमार जैन के जीवन पर उक्त योग पूर्णतया घटित होता है।

आपको बचपन से साहित्यिक कृतियों से लग रहा है। हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के प्रायः सभी सुप्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित साहित्यकारों की रचनाओं के अतिरिक्त आपने अंग्रेजी भाषा के हस्ताक्षरों को पढ़ा। युवावस्था में मैकेनिकल इंजीनियरिंग के अतिरिक्त टैक्स्टाईल इंजीनियरिंग तथा एम.बी.ए. (वित्त) में उपाधि प्राप्त की। रूचि बढ़ी तो संस्कृत तथा ज्योतिष विषय का विधिवत अध्ययन किया। गत् लगभग 25 वर्षों से आप ज्योतिष जगत में सक्रिय हैं। आप पंचांग कर्ता हैं, ज्योतिष विषयक मूर्धन्य लेखक हैं भूमंडलीय ज्योतिष में निष्णात हैं। ज्योतिष जगत् की विभिन्न मासिक पत्रिकाओं में आपके हिन्दी, अंग्रेजी तथा गुजराती भाषाओं में आपके लेख निरन्तर प्रकाशित होते हैं। राष्ट्रीय पंचांगों में प्रकाशित व्यापारिक भविष्यवाणियाँ तथा राजनैतिक आकलन आपकी विशेषता है। अब तक आपके लगभग 500 लेख तथा चार पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। 'शेयर मार्केट एस्ट्रोलाजी' तथा अन्य दो पुस्तकों पर कार्य प्रगति पर है।

चैत्र मास 2026

चैत्र मास : चैत्र मास शुक्ल प्रतिपदा का अपना विशेष महत्व है। यह कल्पारम्भ का दिन है, संवत्सरारम्भ का दिन है। मत्स्यावतार इसी दिन हुआ था। संवत्सर पूजा, तिलक व्रत, आरोग्यव्रत, विद्याव्रत, वासंतिक नवरात्र आरम्भ, कलश स्थापन भी इसी प्रतिपदा में किया जाता है। प्रतिपदा उदयव्यापिनी ग्राह्य है। दोनों दिन की व्याप्ति अथवा अव्याप्ति में पूर्वा प्रतिपदा ही ग्राह्य है।

वासंतिक नवरात्र : इस वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा 19 मार्च प्रातः 06:53 से प्रारम्भ होकर 19 मार्च रात्रि में 28:52 पर समाप्त होगी। जम्मू में सूर्योदय प्रातः 06:40 पर होने से प्रतिपदा क्षय तिथि मानी जायेगी। शास्त्रकारों का मत है कि दूसरे दिन एक मुहूर्त के लिये भी प्रतिपदा प्राप्त हो तो नवरात्रारम्भ, कलश स्थापन उसी दिन करना चाहिये। देवी पुराण में स्पष्टतया कहा है कि:

अमायुक्ता न कर्तव्या प्रतिपच्चण्डिकार्चने।

मुहूर्तमात्रा कर्तव्या द्वितीयायां गुणान्विता।।

प्रतिपदा एक मुहूर्त से कम हो अथवा प्रतिपदा का क्षय हो, जैसा कि इस विक्रमी संवत में हो रहा है तब शास्त्रानुसार अमाविद्धा प्रतिपदा ग्राह्य है। अतः इस वर्ष कलश स्थापना आदि के मुहूर्त निम्न प्रकार रहेंगे।

घटस्थापना मुहूर्त : गुरुवार 19 मार्च प्रातः 06:53 से 07:43 तक

अभिजित मुहूर्त घटस्थापना : मध्यान्ह 12:05 से 12:53 तक

नवरात्र पारणा : शुक्रवार 27 मार्च पूर्वान्ह 10:07 पश्चात्

नवरात्र के प्रथम दिन शुद्ध चित्त होकर मिट्टी की वेदी बनायें तथा उसमें गोहूँ एवं जौ मिलाकर बो दें। वही पर चित्रमयी मूर्ति विराजमान करें। नौ दिन तक नौ कन्याओं को भोजन कराकर स्वयं बाद में भोजन करें। विसर्जन दसवें दिन करें। इस व्रत के प्रभाव से सब प्रकार के विपुल सुख साधन प्राप्त होते हैं। भगवती प्रसन्न रहती है।

बारह-राशियों का मासगत वार्षिक फलादेश सन् 2026 ई०



ज्योतिर्विद् प्रवीनकुमार जैन

मेघ राशि

वर्ष पर्यन्त शनि के मीन राशि से गोचर में दूरस्थ स्थानों की यात्रा होगी। व्यय अधिक रहेगा। कार्य करने में परेशानी आयेंगी। मानसिक तनाव रहेगा। वर्षारम्भ से गुरु के गोचरीय प्रभाव से परिवार में झगड़े झंझट होंगे। मतभेद बढ़ेंगे। भाईयों से विवाद होगा। कार्यस्थल पर अवरोध रहेंगे। नौकरी में व्यवधान होगा। कष्टदायक अथवा अप्रिय स्थान पर स्थानान्तर होगा। शारीरिक रोगों से परेशान रहेंगे। आर्थिक हानि से धन का अभाव रहेगा। जीवन साथी को कष्ट होगा। गर्भपात की सम्भावना बनेगी। इण्टरव्यूज तथा परीक्षाओं में अपेक्षित सफलता की कमी खटकेगी। भाग्योदय में अड़चन रहेगी।

जनवरी: शरीर निर्बल रहेगा। विरोधी प्रभावी होंगे। महिलाओं के कारण कलह एवं कष्ट की स्थिति बनेगी। आर्थिक हानि होगी। 14 जनवरी से स्थिती में सुधार होगा। वरिष्ठों का सहयोग मिलेगा। प्रतिष्ठित कार्य सफलता पूर्वक सम्पन्न होगा। 16 जनवरी से दूरस्थ स्थान अथवा विदेश यात्रा का योग रहेगा। इस समय कठिन परिस्थितियों के निवारण के लिय अवांछित कार्यों से बचकर रहना श्रेयस्कर होगा। वाक्चातुर्य से हानि होगी। सामाजिक कार्यों में समय व्यर्थ करेंगे। मिथ्या अपवाद से बचेंगे परन्तु किसी के दुर्व्यवहार से कष्ट होगा। मन अशान्त रहेगा। शुभ दिन : 06, 11, 18, 21, 23, अशुभ दिन : 02, 04, 08, 13, 16, 25, 27, 29, 31

फरवरी: शुभ कार्यों की प्रवृत्ति रहेगी। सन्तान के विषय में चिन्तित होंगे। वरिष्ठों से मतभेद होंगे। यश, मान सम्मान में कमी आयेंगी। रोग ग्रस्त होंगे। शरीर निर्बल होगा। विरोध एवं विरोधी प्रभावी होंगे। महिलाओं के कारण कलह एवं कष्ट की स्थिति बनेगी। धनागम में कमी रहेगी। 13 फरवरी से मांगलिक उत्सवों में व्यवधान आयेगा। 23 फरवरी से चले आ रहे मुकद्दमों में अपेक्षित

परिणाम नहीं मिलेंगे। सहोदरों से मतभेद होंगे। भूमि-भवन से हानि होगी अतः इस समय भूमि-भवन से लाभ के विचार को निरस्त रखना उचित होगा। शुभ दिन : 02, 07, 15, 17, 19, अशुभ दिन : 05, 10, 12, 21, 23, 26, 28

मार्च: व्यवसाय एवं अन्य कार्यों में सफलता मिलने से आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। पद प्रतिष्ठा का लाभ मिलेगा। पारिवारिक सम्बन्धों में सुधार आयेगा। दाम्पत्य जीवन का सुख रहेगा। प्रेम सम्बन्धों में सफलता मिलेगी। महिलाओं मित्रों तथा सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा। नौकरीपेशा वर्ग तथा स्टार्टअप में कार्यरत व्यक्तियों की उन्नति होगी। सफेद वस्तुओं, तरल पदार्थों, सुगन्धित द्रव्यों, श्रृंगारिक वस्तुओं तथा सौन्दर्य प्रसाधनों के व्यापारी लाभ में रहेंगे। व्यय पर नियन्त्रण रहेगा। स्वास्थ्य लाभ होगा। दुर्घटनाओं से बचाव होगा। नये अनुबंधों पर गहन विचार आवश्यक रहेगा। अविवाहितों का विवाह योग बनेगा। शुभ दिन : 06, 14, 16, अशुभ दिन : 02, 04, 09, 11, 18, 21, 23, 25, 27, 29, 31

अप्रैल: किसी कारणवश घर से दूर रहना होगा। सहोदरों के साथ पारिवारिक झगड़े झंझटों से परेशान रहेंगे। नेत्र रोग, उच्च रक्त अथवा रक्त सम्बन्धी किसी रोग से पीड़ित होंगे। मान-सम्मान गिरेगा। दाम्पत्य जीवन में मतभेद बनेंगे। वाद विवादों से कार्यों में अवरोध आयेंगे, हानि होगी। असफलता से पद हानि का भय रहेगा। सन्तान के कारण पीड़ा होगी। शिक्षा में विघ्न रहेगा। क्रियेटिविटी में कमी आयेंगी। 14 अप्रैल के पश्चात् शिक्षा तथा अध्ययन में सफलता मिलेगी। पारिवारिक समस्याओं का समाधान होगा। झगड़े झंझट समाप्त होंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। यात्रायें होगी। व्यापार में उन्नति होगी। शुभ दिन : 03, 13, 30 अशुभ दिन : 05, 08, 10, 15, 17, 19, 21, 23, 25, 28

ग्रहण विवरण विक्रमी संवत् 2083 (सन् 2026-27 ई०)

आङ्गल वर्ष जनवरी सन् 2026 से मार्च 2027 तक की अवधि में मध्य भू-मंडल पर 03 सूर्य ग्रहण तथा 03 चन्द्रग्रहण होंगे। इस प्रकार इस अवधि में कुल छः ग्रहण होंगे। विक्रमी संवत् 2083 में दो सूर्य ग्रहण तथा 02 चन्द्रग्रहण होंगे। इनमें भी एक खग्रास तथा दो कंकणाकृति सूर्य ग्रहण होंगे। एक खग्रास, पेनुम्बराल तथा एक खण्डग्रास चन्द्रग्रहण होगा। 03 मार्च 2026 तथा 21 फरवरी 2027 के चन्द्रग्रहण के अतिरिक्त कोई भी ग्रहण भारत में दिखाई नहीं पड़ेगा।

कंकणाकृति सूर्य ग्रहण 17 फरवरी 2026



ग्रहण स्पर्श 17 फरवरी : 15:26:26 (भा.मा.स.)

कंकणाकृति ग्रहण प्रारम्भ 17 फर : 17:12:54

ग्रहण मध्य 17 फरवरी : 17:42:04 (भा.मा.स.)

कंकणाकृति ग्रहण समा. 17 फर : 18:11:29

मोक्ष 17 फरवरी : 19:57:42 (भा.मा.स.)

मेग्निट्यूड : 0.963

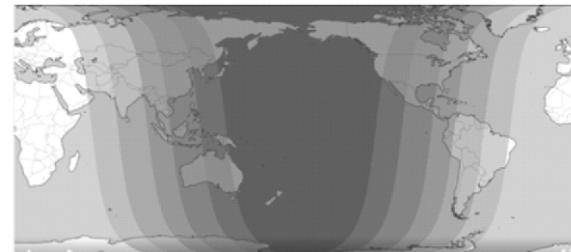
कंकणाकृति सूर्यग्रहण अन्टार्कटिका के कन्कोरडिया स्टेशन से देखा जा सकेगा। अन्टार्कटिका के अन्य क्षेत्रों, चिली, नार्वे, फ्रांस, दक्षिणी अफ्रीका के केप टाउन- पोर्ट एलिजाबेथ, अमस्टरडम, आईलेण्ड, डर्बन, जोहान्सबर्ग, जिम्बाबवे, डियागो गर्सिया, पोर्ट लुईस, मेडागास्कर, सेसेल्स में खण्डग्रास सूर्य ग्रहण दिखाई पड़ेगा।

सामान्यतया कोई भी सूर्यग्रहण, किसी भी चन्द्रग्रहण के दो सप्ताह-एक पक्ष- पहले अथवा बाद में घटित होता है। परन्तु 17 फरवरी 2026 तथा इससे पूर्व 21 सितम्बर 2025 के सूर्य ग्रहण के मध्य कोई भी चन्द्रग्रहण नहीं था। सहिता ग्रंथों में इसका फल अशुभ माना गया है। माघ मास, ग्रहण स्वामी चन्द्रमा, मंगलवारी ग्रहण से ग्रहण फल मध्यम रहेगा। वैश्विक स्थिति चिन्ताजनक बनेगी। मंहगाई बढ़ेगी। सर्विस क्लास, नौकरी-पेशा तथा बुद्धिजीवी वर्ग कष्ट अनुभव करेगा। ग्रहण ग्रस्त देशों में वर्षा में कमी रहेगी। अग्निकांड, विस्फोट आदि से हानि होगी। राजकीय मतभेद होंगे। कपास, रुई, सूत, कपड़ा, चांदी, शक्कर, तांबा, सोना, पीतल, मूंगा, गेहूँ, चावल की कमी रहेगी। ग्रहण ग्रस्त देशों में इन वस्तुओं का इम्पोर्ट बढ़ेगा। पर्वतीय क्षेत्रों में ट्रेक्स के साथ दुर्घटनाये होगी। गुरु दृष्ट ग्रहण से अन्य ग्रहों के अशुभ दृष्टि फलों में किंचित न्यूनता रहेगी। भारत में ग्रहण दिखाई न पड़ने से इसका धार्मिक महत्व नहीं है।

विभिन्न राशि वाले व्यक्तियों पर ग्रहण का प्रभाव

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
फल	रोग	अपमान	सिद्धि	लाभ	हानि	घात	हानि	धनप्राप्ति	विध्वंस	चिन्ता	सौख्य	दम्पतिवियोग

खग्रास चन्द्रग्रहण 2-3 मार्च 2026



ग्रहण प्रारम्भ 03 मार्च : 14:14:25 (भा.मा.स.)

खग्रास ग्रहण प्रारम्भ 03 मार्च : 16:34:34 (भा.मा.स.)



पीयूष रैणा
अभियन्ता

तुलसी विवाह विधि

डॉ. चन्द्रमौलि रैणा

शास्त्रों के अनुसार तुलसी विवाह का अत्यन्त महत्व है। जो भक्त तुलसी विवाह करवाते हैं वह लोग भगवान विष्णु एवं तुलसी माता के कृपा पात्र बनते हैं। ऐसे भक्तों के ऊपर प्रभु की हमेशा कृपा बनी रहती है। वह स्वयं तो कृपा पात्र बनते ही हैं साथ ही उनके कुल के समस्त जन भी भगवान के कृपा पात्र बन जाते हैं। तुलसी विवाह करवाने वालों को धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पुरुषार्थ भगवान की कृपा से सिद्ध होते हैं।



दीपक शास्त्री

एम.ए., बी.एड.

तुलसी विवाह की कथा

पौराणिक कथा के अनुसार एक जलंधर नाम का दैत्य हुआ है। जिसकी उत्पत्ति भगवान शिव के तीसरे नेत्र से हुई थी। एक समय की बात है भगवान शिव क्रोधित होकर अपना तीसरा नेत्र खोलते हैं, जिससे एक ज्वाला निकली, यह ज्वाला समुद्र में गिरती है, वहाँ ज्वाला एक बालक का रूप ले लेती है। समुद्र से उत्पन्न होने के कारण उसे सिंधु पुत्र या जलंधर भी कहा गया। जलंधर का विवाह वृंदा से हुआ था जो असुर कन्या थी और भगवान विष्णु की परम भक्त थी। वह एक अत्यंत पतिव्रता स्त्री थी। भगवान शिव से उत्पन्न होने के कारण जलंधर अत्यन्त शक्ति संपन्न था। जलंधर अपनी शक्तियों का दुरुपयोग करने लगा। उसने देवताओं को परेशान करना शुरू कर दिया। देवताओं पर वह हर युद्ध में विजय रहता। देवताओं ने भगवान शिव

की शरण ग्रहण की और भगवान शिव ने देवताओं के पक्ष में जलंधर से युद्ध शुरू किया। परन्तु युद्ध में जलंधर भगवान शिव के प्रहार को सहजता से सह जाता। जलंधर का वध नहीं हो रहा था, देवता भी चिंतित हो उठे कि भगवान शिव भी जलंधर का कुछ नहीं बिगाड़ पा रहे। जब विष्णु आदि देवताओं के विचार करने पर बोध हुआ कि जलंधर की शक्ति का कारण इसकी पत्नी वृंदा का सतीत्व है। वह भगवान विष्णु की परम भक्त और पतिव्रता नारी है। भगवान विष्णु ने वृंदा के पतिव्रत धर्म को भंग करने के लिए जलंधर का रूप धारण किया और उसके पास गए। वृंदा ने उन्हें अपना पति समझकर उनके साथ वैसा ही व्यवहार किया, जिससे वृंदा का पतिव्रत धर्म भंग हो गया। जब वृंदा का पतिव्रत धर्म भंग हुआ तो भगवान शिव ने जलंधर का वध कर दिया। पर जब वृंदा को भगवान के छलपूर्वक अपने तप व सतीत्व को समाप्त करने का पता चला तो वह अत्यन्त क्रोधित हुई और श्री हरि विष्णु को श्राप दिया कि तुम पत्थर के हो जाओ। प्रभु ने वृंदा के श्राप को स्वीकर किया। वृंदा ने दूसरा श्राप दिया कि आपको रामावतार में सीता का वियोग सहन करना पड़ेगा।

तुलसी की उत्पत्ति

वृंदा अपने पति की मृत्यु से दुखी होकर, आत्मदाह कर लेती है और उसकी राख से तुलसी के पौधे का प्रादुर्भाव होता है।

भगवान विष्णु तुलसी को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करते हैं और वरदान देते हैं कि तुलसी के बिना मेरी पूजा अधूरी मानी जाएगी। तुलसी के बिना मैं प्रसाद स्वीकार नहीं करूँगा। इस पत्थर को शालिग्राम नाम से तुलसी जी के साथ ही पूजा जायेगा। कार्तिक महीने में तुलसी का विवाह शालिग्राम के साथ किया जाता है।

जो भक्तजन तुलसी विवाह संपन्न कराते हैं, उनको वैवाहिक सुख मिलता है।

आँवले के वृक्ष का माहात्म्य

- * आँवला वृक्ष विष्णु को प्रिय है, इसके स्मरणमात्र से गोदान का फल मिलता है।
- * स्पर्श करने से इससे दोगुणा और फल भक्षण करने से तिगुणा पुण्य प्राप्त होता है इसलिए सदा प्रयत्नपूर्वक आँवले का सेवन करना चाहिए।
- * यह सब पापों को हरने वाला वैष्णव वृक्ष गया गया है।
- * इसके मूल में विष्णु, ऊपर ब्रह्मा, स्कन्ध में परमेश्वर भगवान् रुद्र, शाखाओं में मुनि, टहनियों में देवता, पत्तों में वसु, फलों में परमदण तथा फलों में समस्त प्रजापति निवास करते हैं।
- * आँवले को लगाने से मनुष्य जन्म-मृत्यु के बन्धन से मुक्त हो जाते हैं और इसके भक्षण मात्र से सब पापों से मुक्त हो जाते हैं।
- * आँवला खाने से आयु बढ़ती है, उसका जल पीने से धर्म संचय होता है और उसके मिश्रित जल द्वारा स्नान करने से दरिद्रता दूर हो जाती है तथा सब प्रकार के ऐश्वर्य प्राप्त हो जाते हैं।
- * एकादशी के दिन यदि एक आँवला मिल जाए तो उसके सामने गंगा, काशी, गया, पुष्करादि तीर्थ का महत्व प्राप्त हो जाता है।
- * जो दोनों पक्षों की एकादशी के दिन आँवले से स्नान करता है उसके सब पाप नष्ट हो जाते हैं और वह श्री विष्णुलोक में सम्मानित होता है।
- * आँवले के दर्शन, स्पर्श तथा उसके उच्चारण से सन्तुष्ट होकर वरदायक भगवान् विष्णु अनुकूल हो जाते हैं।
- * जहाँ आँवले का फल मौजूद होता है वहाँ भगवान् विष्णु सदैव विराजमान रहते हैं तथा उस घर में ब्रह्मा एवं सुस्थिर लक्ष्मी का वास होता है।



श्रीमती कमलेश शास्त्री

- * जो आँवले की छाया में पिण्डदान करता है उसके नरक में पड़े हुए पितर भी मुक्त हो जाते हैं।
- * जो मस्तक शरीर, हाथ, मुख, किसी अवयव में आँवले का फल धारण करता है उसे साक्षात् श्री हरि का स्वरूप समझना चाहिए।
- * तीन दल वाला, सत्व, रज, तमः स्वरूप सूर्य चन्द्र तथा अग्नि, त्रिनेत्र स्वरूप और आयुधत्रय स्वरूप तथा तीनों जन्मों के पापों को नष्ट करने वाला विल्वपत्र मैं भगवान् के लिए समर्पित करती हूँ।
- * छिद्ररहित, सुकोमल, तीन पत्ते वाले मंगल प्रदान करने वाले विल्व पत्र से मैं भगवान् शिव की पूजा करूँगी। यह विल्वपत्र शिव जी को समर्पित करती हूँ।
- * अखण्ड विल्वपत्र से नन्दिकेश्वर भगवान् की पूजा करने पर मनुष्य सभी पापों से मुक्त हो कर शुद्ध हो जाते हैं, मैं विल्वपत्र शिव को समर्पित करती हूँ।
- * मेरे द्वारा किया गया भगवान् शिव को यह विल्व पत्र का समर्पण हजारों करोड़ गजदान, सैंकड़ों वाजपेय यज्ञ के अनुष्ठान तथा करोड़ों कन्याओं के महादान के समान हो। अतः मैं विल्व पत्र भगवान् शिव को समर्पित करती हूँ।
- * मेरे द्वारा किया गया भगवान् को यह विल्व पत्र का समर्पण कदाचित् ब्राह्मणों को शालीग्राम शिला के दान के समान महान पुण्यशाली हो अतः मैं विल्वपत्र भगवान् शिव को समर्पित करती हूँ।
- * भगवती लक्ष्मी के प्रादुर्भाव तथा महादेवी के अत्यन्त प्रिय विल्वपत्र भगवान् शिव को समर्पित है।
- * विल्व वृक्ष का दर्शन और उसका स्पर्श समस्त पापों को नष्ट करने वाला तथा शिवापराध का संहार करने वाला है।
- * यह विल्व पत्र भगवान् शिव को समर्पित है।
- * विल्व पत्र का मूल भाग, ब्रह्मरूप मध्य भाग विष्णु रूप एवं अग्र भाग शिव रूप है। ऐसा विल्वपत्र भगवान् शिव को समर्पित करती हूँ।
- * जो भगवान् शिव के समीप इस पुण्य प्रदान करने वाले विल्वपत्र का पाठ करता है, सह समस्त पापों से मुक्त होकर अन्त में शिव लोक को प्राप्त करता है।

श्रीविक्रमी संवत् 2083										चैत्र शुक्ल पक्ष										शकः 1948, सन् 2026 ई.										20 मार्च से 2 अप्रैल										सूर्योत्तरायणे, बसन्त ऋतौ, उत्तरगोलार्धे										दै. सूर्योदयास्त																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																					
दिनमान		चण्डे		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट		दि		न		मिन्ट			

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग				श्री विक्रमी संवत् 2083				चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से वैशाख कृष्ण पक्ष अमावस्या तक				मार्च-अप्रैल, सन् 2026 ई०								
मास पक्ष	अश्विनी तिथि	विक्रमी संवत्	शक संवत्	वार	तिथि	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		चंद्र-राशि प्रवेश घ. मि.	पंचक, भद्रा, ग्रहों का राशि प्रवेश घण्टा मिनटों में (भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम)	जम्मू				
	मार्च	चैत्र	चैत्र			घ. मि.	घ. मि.		घ. मि.	घ. मि.		सूर्योदय घ. मि.	सूर्यास्त घ. मि.							
चैत्र शुक्ल पक्ष	0	0	0	गुरु	1	28	52	0	0	0	0	0	0	0	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, संवत्सरारम्भः गुरुवासरे ज्योतिष दिवस	0	0	0	0	
	20	7	29	शुक्र	2	26	31	रेवती	26	27	ब्रह्म	22	14	मेघ 26:27	चन्द्रदर्शनम् (मु.30), सं.सि.योग, पञ्चकसमाप्तिः 26:27, मंगल पू.भा. मेंA	06	38	18	37	
	21	8	30	शनि	3	23	56	अश्वि	24	37	ऐन्द्र	19	0	मेघ	मत्स्योत्पत्तिः, अरुन्धती व्रतं पूजनमञ्च, गणगौरा पूजा, सौभाग्य शयन व्रत,B	06	37	18	38	
	22	9	चैत्र	रवि	4	21	16	भरणी	22	42	वैधृति	15	41	वृष 28:13	भद्रा 10:37 से 21:17 तक, भा. चैत्रारम्भः	06	36	18	39	
	23	10	2	सोम	5	18	38	कृत्ति	20	49	विष्णु	12	21	वृष	श्रीलक्ष्मी पञ्चमी रौद्रनामसंवत्सर, सं.सि. योग	06	34	18	40	
	24	11	3	मंगल	6	16	08	रोहि	19	04	प्रीति आयु	09 29	07 59	वृष	स्कन्दषष्ठी व्रत, द्विपुष्कर योग 19:05 से	06	33	18	40	
	25	12	4	बुध	7	13	50	मृग	17	33	सौभा.	27	09	मिथुन 6:16	भद्रा 13:50 से 24:46 तक, सं.सि. योग 6:32 से	06	32	18	41	
	26	13	5	गुरु	8	11	49	आर्द्रा	16	19	शोभन	24	31	मिथुन	श्रीरामनवमी, श्रीदुर्गाष्टमी, अन्नपूर्णा पूजनम्, शुक्र (अश्वि) मेघ में 5:08, C	06	30	18	42	
	27	14	6	शुक्र	9	10	07	पुन	15	24	अति.	22	10	कर्क 9:35	उदयानवमी, नवरात्र समाप्त, श्रीदुर्गा नवमी, सं.सि. योग	06	29	18	42	
	28	15	7	शनि	10	08	46	पुष्य	14	50	सुकर्मा	20	05	कर्क	भद्रा 20:12 से, गण्डमूल प्रारंभ 14:50, व्रतबन्धदशमी	06	28	18	43	
	29	16	8	रवि	11	07	46	आश्ले	14	37	धृति	18	19	सिंह 14:37	कामदा एकादशी व्रत, भद्रा 7:46 तक, लक्ष्मीकान्त दोलोत्सवः, गण्डमूल	06	26	18	44	
	30	17	9	सोम	12	07	09	मघा	14	47	शूल	16	51	सिंह	सोम प्रदोष व्रत, गण्डमूल 14:47 तक, अनङ्गत्रयोदशी	06	25	18	44	
	31	18	10	मंगल	13	06	56	पू.फा.	15	20	गंड	15	41	कन्या 21:32	महावीर जयन्ती (जैन), शिवपूजन विशेष सूर्य रेवती में 20:08	06	24	18	45	
	अप्रै.	19	11	बुध	14	07	06	उ.फा.	16	17	धृति	14	50	कन्या	श्रीसत्यनारायण व्रत, भद्रा 7:06 से 19:20 तक, सं.सि. योग 16:17 से,D	06	22	18	46	
2	20	12	गुरु	15	07	41	हस्त	17	38	ध्रुव	14	19	कन्या	पूर्णिमा व्रत, श्रीहनुमन्जयन्ती, वैशाख स्नान प्रारम्भ, चित्रान्नदानं भक्षणञ्च, E	06	21	18	47		
वैशाख कृष्ण पक्ष	3	21	13	शुक्र	1	08	42	त्रि	19	24	व्याघ्रा	14	08	तुला 6:28	वैशाख कृष्ण प्रतिपदा B शिवशक्ति पूजा, गण्डमूल समाप्त 24:37	06	20	18	47	
	4	21	14	शनि	2	10	09	स्वाति	21	35	हर्षण	14	17	तुला	भद्रा 23:02 से, सं.सि. योग D बुध पू.भा. में 20:01	06	19	18	48	
	5	22	15	रवि	3	12	00	विशा	24	07	वज्र	14	43	वृ. 17:27	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय जम्मू 22:03, शुक्र भरणी में 24:58, F	06	17	18	49	
	6	23	16	सोम	4	14	10	अनु	26	56	सिद्धि	15	25	वृश्चिक	अनुसूया जयन्ती, गण्डमूल प्रारंभ 26:56, स.सि.योग, मंगल उ.भा. में 21:55	06	16	18	49	
	7	24	17	मंगल	5	16	34	ज्येष्ठ	29	53	व्यती	16	16	धनु 29:53	गण्डमूल, श्रीगुरुतेगबहादुर जयन्ती E मङ्गल मीन में 15:28	06	15	18	50	
	8	25	18	बुध	6	19	01	मूला	00	00	वरीया	17	10	धनु	भद्रा 19:01 से, गण्डमूल F भद्रा 12:00 तक	06	14	18	51	
	9	26	19	गुरु	7	21	19	मूला	08	48	परिघ	17	57	धनु	भद्रा 8:12 तक, गण्डमूल समाप्त 8:48, श्रीगुरु अर्जुनदेव जयन्ती	06	12	18	52	
	10	27	20	शुक्र	8	23	15	पू.षा.	11	27	शिव	18	30	मकर 18:03	बुध मीन में 25:12 G सूर्य (अश्वि) मेघ में 9:30	06	11	18	52	
	11	28	21	शनि	9	24	37	उ.षा.	13	39	सिद्धि	18	38	मकर	चण्डिका नवमी व्रत, सं.सि. योग 13:40 से H गण्डमूल, सं.सि. योग	06	10	18	53	
	12	29	22	रवि	10	25	17	श्रवण	15	14	साध्य	18	15	कुंभ 27:44	भद्रा 13:03 से 25:17 तक, पञ्चक प्रारम्भ 27:44	06	09	18	54	
	13	30	23	सोम	11	25	08	धनि	16	03	शुभ	17	16	कुंभ	वरूथिनी एकादशी व्रत, श्री वल्लभाचार्य जयन्ती, बुध उ.भा में 14:17	06	07	18	54	
	14	वैशा.	24	मंगल	12	24	12	शत	16	05	शुक्ल	15	39	कुंभ	मेला वैशाखी (पञ्जाब जम्मू), त्रिपुष्करयोग 16:05, वैशाख संक्रान्ति, G	06	06	18	55	
	15	2	25	बुध	13	22	31	पू. भा.	15	22	ब्रह्म	13	25	मीन 9:37	प्रदोष व्रत, भद्रा 22:31 से, मासिक शिवरात्रि व्रत	06	05	18	56	
	16	3	26	गुरु	14	20	11	उ. भा.	13	58	ऐन्द्र	10	37	मीन	भद्रा 9:25 तक, गण्डमूल प्रारम्भ 13:58, शुक्र कृतिका में 22:13, सं.सि. योग 13:59 से	06	04	18	56	
	17	4	27	शुक्र	30	17	21	रेवती	12	02	वैधृति विष्कुम्भ	07 27	21 36	मेघ 12:02	देवपितृकार्योऽमावस, पञ्चक समाप्ति 12:02, शनि उ.भा. 4 चरणे 13:49, H	06	03	18	57	
	A 21:20, बुध मार्गी 25:02, सायन सूर्य मेघ में 19:55, गण्डमूल C मेला कांगडा देवी, नैना देवी (हि.प्र.), मेला बाहूफोर्ट (जम्मू), सं.सि. योग 16:19 से																165			

शुभ विवाह मुहूर्त विक्रमी संवत् 2083 (सन् 2026-27 ई०)

मुहूर्तनिर्णोता : पं० रवीन्द्र रैणा, बी०एस०सी०एल०एल०बी०, रैणा ज्योतिष कार्यालय, बी. सी. रोड, जम्मू, मोबाईल 9419189111

पं० विनय शास्त्री, तालाब तिल्लो, जम्मू, मोबाईल : 9419149757

डॉ० रामदास शर्मा, आचार्य ज्योतिष, श्री प्रवीण जैन ज्योतिर्विद

(1) अधिकमास प्रारम्भ— 17 मई से 15 जून तक अधिमास। (2) बृहस्पति अस्त— विक्रमी संवत् 2083 सन् 2026-27 ई. में बृहस्पति अस्त 14 जुलाई मंगलवार को पश्चिम में अस्त होकर 10 अगस्त सोमवार को पूर्व में उदित हो जाएगा। (3) शुक्रास्त— 11 अक्टूबर सन् 2026 ई. रविवार को पश्चिम में अस्त होकर 28 अक्टूबर सन् 2026 ई. बुधवार को पूर्व में उदय होगा। ध्यान दें- गुरु शुक्र के अस्त दिन से तीन दिन पूर्व वार्धक्य-दोष और उदयकाल के तीन दिन पश्चात् वाल्पत्यदोष होता है, इन वार्धक्य एवं वाल्पत्य दोष के दिनों में शुभ कार्य वर्जित होते हैं।	काल शुद्धि (4) श्राद्धकाल— 26 सितम्बर से 10 अक्टूबर 2026 ई. तक श्राद्ध पक्ष रहेगा। (5) भीष्म पञ्चक — 20 नवम्बर से 24 नवम्बर तक भीष्म पञ्चक रहेंगे। जम्मू डूंगर प्रदेश में परम्परा अनुसार विवाहादि शुभ कार्य वर्जित माने गये हैं परन्तु अन्य प्रान्तों में भीष्म पञ्चकों में विवाह होते हैं अतः विवाह मुहूर्त लगाए गये हैं जिद्वान स्वयं निर्णय कर सकते हैं।	(5) गुरु सिंहस्थ दोष— 31 अक्टूबर से 25 जनवरी सन् 2027 ई. तक गुरु सिंहस्थ दोष है परन्तु शास्त्र सम्मति से कुछ प्रान्तों को त्यागकर दूसरे प्रान्तों में विवाहादि मुहूर्त हो सकते हैं अतः विवाह मुहूर्त लगाए गये हैं। (6) पौष मास— 16 दिसम्बर से 13 जनवरी तक पौष मास रहेगा। इस मास में विवाहादि मुहूर्त वर्जित हैं। (7) होलाष्टक— 15 मार्च सन् 2027 ई. से 22 मार्च तक होलाष्टक रहेगा। इन दिनों विवाहादि मंगल कार्य वर्जित हैं।
--	---	--

वैशाख मास (अप्रैल-मई) विवाह मुहूर्त सन् 2026 ई. वि.सं. 2083

पक्ष-तिथि	वार	दिनांक	मास प्रविष्टा	नक्षत्र	चन्द्र राशि	सूर्य राशि	गुरु राशि	रेखा/दोष	शुद्ध लग्न ग्रह की पूजा दानादि विवरण
वैशाख शु.2	रवि	19 अप्रैल	6 वैशाख	रोहिणी	वृष	मेष	मिथुन		रा.ल. 12 अर्द्धरात्रौपरि 4:34 से 5:42 (मं.शु.श.दान)
वैशाख शु.3	सोम	20 अप्रैल	7 वैशाख	रोहि./मृग.	वृष	मेष	मिथुन		दि.ल. 4, दिवा 11:22 से 13:46 तक, रा.ल.12, अर्द्धरात्रौपरि 4:22 से 5:38 तक (मं.शु.श. दान) अक्षय तृतीया
वैशाख शु.5	मंगल	21 अप्रैल	8 वैशाख	मृगशिरा	वृष/मिथुन	मेष	मिथुन	0 0	दि.ल. 4, दिवा 11:18 से 13:43 तक, गोधूलि (7), ल. 8 रात्रि 8:48 से 11:10 तक (रा.दान, सप्तमेशुक्रः पूज्यः)
वैशा.शु.9/10	शनि	25 अप्रैल	12 वैशाख	मघा	सिंह	मेष	मिथुन	00 0	रा.ल. 8, रात्रि 8:33 से 10:54 तक (वृ.शु.दान पूजा) रात्रि 11:01 से 3:04 तक क्रांति साम्यदोष, रा.ल. 12 अर्द्धरात्रौपरि 4:02 से 5:19 तक (मं.शु.श. पूज्यः)
वैशा. शु.10	रवि	26 अप्रैल	13 वैशाख	मघा	सिंह	मेष	मिथुन	00 0	दि.ल. 3 दिवा 8:43 से 10:59 तक, केन्द्रे गुरुः प्रशस्तः ल. 4 दिवा 10:59 से 13:23 तक, गोधूलि, रा.ल. 8:29 से 10:50 तक (वृ.शु. पूज्यः) अग्रे पञ्चशलाकावेध

वैदिक फलित ज्योतिष एवं वैवाहिक मिलान में नवताराओं एवं तारा मैत्री का महत्त्व (तारा बल)

वैदिक फलित ज्योतिष और वैवाहिक मिलान में नवताराओं एवं तारा मैत्री (तारा बल) का विशेष महत्त्व है। हमारे वैदिक ऋषियों ने अपने ज्योतिषीय अनुसंधान में पाया कि जन्म नक्षत्र से सापेक्ष प्रथम नौ (नवक) नक्षत्र नौ प्रकार का फल देते हैं; जन्म नक्षत्र से 10वें नक्षत्र से अगले नौ नक्षत्रों में; तथा 19वें नक्षत्र से अगले नौ नक्षत्रों में क्रम से उन्हीं फलों की पुनरावृत्ति होती है। अतः उनके फलानुसार ही उन्होंने इनके नाम रखे हैं।

इस प्रकार कुल 27 नक्षत्र 9 समूहों में बंट जाते हैं और प्रत्येक समूह में कुल तीन नक्षत्र शामिल होते हैं; इन नक्षत्र समूहों को तारा कहते हैं। इनके नाम इस प्रकार हैं :-

जन्म सम्पत् विपत् क्षेम प्रत्यरि साधको वधः।

मैत्रं तथाऽति (तथाति) मैत्रं च तारा नाम सदा फलाः॥

अर्थात् जन्म, सम्पत्, विपत्, क्षेम, प्रत्यरि, साधक, वध, मित्र एवं अति मित्र ये नवतारायें हैं। ये नाम के समान ही फल देती है।

‘जन्म नक्षत्र’ को ‘जन्म तारा’ भी कहते हैं। जन्म नक्षत्र से 10वें एवं 19वें नक्षत्र यहाँ से क्रमशः द्वितीय एवं तृतीय आवृत्तियाँ आरम्भ होती हैं उन्हें क्रमशः अनुजन्म नक्षत्र या अनुजन्म तारा और त्रिजन्म नक्षत्र या त्रिजन्म तारा भी कहते हैं।

प्रायः इन ताराओं को एक तालिका के रूप में दर्शाया जाता है। इस तालिका को नवतारा चक्र या केवल तारा चक्र से जानते हैं। उदाहरण हेतु यदि किसी का जन्म पुष्य नक्षत्र में हुआ है तो उसके लिए तारा चक्र नीचे दी गई तालिका जैसा होगा। किसी भी व्यक्ति के लिए तारा समूह याद रखना अत्यन्त सरल है।



पं. विश्व कुमार शर्मा

अध्यक्ष सनातन धर्म पथ परिषद्
जुगियाल शाखा (केन्द्र पटानकोट)

धर्म प्रचारक

श्री ब्राह्मण सभा पंजीकृत
शाहपुर कंडी टाउनशिप,
जिला पटानकोट (पंजाब)

नवतारा चक्र तालिका

क्रमांक	नवताराओं के नाम	जन्म तारा	अनुजन्म तारा		त्रिजन्म तारा		
1	जन्म →	पुष्य	10	अनुराधा	19	उत्तराभाद्रपद	← जन्म
2	सम्पत् →	आश्लेषा	11	ज्येष्ठा	20	रेवती	← सम्पत्
3	विपत् →	मघा	12	मूला	21	अश्विनी	← विपत्
4	क्षेम →	पूर्वाफाल्गुणी	13	पूर्वाषाढ़ा	22	भरणी	← क्षेम
5	प्रत्यरि →	उत्तराफाल्गुणी	14	उत्तराषाढ़ा	23	कृत्तिका	← प्रत्यरि
6	साधक →	हस्त	15	श्रवण	24	रोहिणी	← साधक
7	वध →	चित्रा	16	धनिष्ठा	25	मृगशिरा	← वध
8	मित्र →	स्वाती	17	शतभिषा	26	आर्द्रा	← मित्र
9	अतिमित्र →	विशाखा	18	पूर्वाभद्रपद	27	पुनर्वसु	← अति मित्र

॥जन्मभमनु जन्मर्क्ष त्रिजन्मभं नेष्टमखिल कार्येषु॥

वर-कन्या शुद्ध गुण-मिलान सारिणी

नोट- वर्ण 1, तारा 3, योनि 4, राशि स्वामी 5, गण 6, भकूट , द्विर्द्वादश 2/12, नवपंचम 5/9, षडाष्टक 6/8, नाडी 8

वर की राशि		मेघ			वृष			मिथुन			कर्क		सिंह			कन्या			
कन्या की राशि	नक्षत्र → ↓	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका 1	कृत्तिका 2 से 4	रोहिणी	मृगशिरा 1, 2	मृगशिरा 3, 4	आर्द्रा	पुनर्वसु 1,2,3	पुनर्वसु 4	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फा. 1	उ.फा. 2, 3, 4	हस्त	चित्रा 1, 2	
मेघ	अश्विनी	28	33	28.5	18.5	21.5	22.5	26	17	19	23.5	31.5	28	21	25	15.5	11	9	13
	दोष	8		3, 6	1,3,6, 2/12	1,3, 2/12	1,3, 2/12	1,3,5	1,3,5,8	1,3,5,8	3,8	3	6	2,6,5/9	2,5/9	2,3,8, 5/9	1,3,5, 6/8,8	1,3,4,5, 6/8,8	1,3,4,5, 6,6/8
	भरणी	34	28	29	19	22.5	14.5	18	26	27	31.5	23.5	25.5	20	18	26	21.5	20	4
	दोष		8	6	1,6, 2/12	1,3, 2/12	1,3,8, 2/12	1,3,5,8	1,3,5	1,3,5	3	3,8	3,6	2,6,5, 5/9	2,8,5/9	2,5,9	1,5, 6/8	1,3,5, 6/8	1,3,5,6, 8,6/8
	कृत्तिका -1	27.5	29	28	18	10	16.5	20	20	21	25.5	26.5	23.5	16.5	20	20	15.5	15.5	18
	दोष	3,6	6	8	1,8, 2/12	1,6,8, 2/12	1,3,6, 2/12	1,3,5,6	1,3,5,6	1,3,5,6	3,6	3,6	3,8	2,3,8, 5/9	2,6, 5/9	2,6, 5/9	1,5,6, 6/8	1,5,6, 6/8	1,3,5, 6/8
वृष	कृत्तिका	18.5	20	19	28	20	26	17.5	17.5	18.5	22	23	20	18.5	22	22	21	21	23.5
	2,3,4	3,6, 2/12	6,2/12	8,2,12	8	6,8	3,6	1,3,6, 2/12	1,3,6, 2/12	1,3,6, 2/12	3,5,6	3,5,6	3,5,8	2,3,5,8	2,5,6	2,5,6	6,6/8	6,6/8	3,6/8
	रोहिणी	23.5	23.5	20	28	36	27.0	23.5	22.5	26	27	12	10.5	24.5	27	26	26	20	
	दोष	3,2/12	3,2/12	2,6,8	6,8	8		1,2/12	1,3, 2/12	1,3,4, 2/12	3,4,5	3,5	3,4,5, 6,8	2,3,4, 5,6,8	2,3,4,5	2,5	5/9	5/9	6,5/9
	मृगशिरा	23.5	14.5	18.5	27.5	35	28	19	24	22.5	26	19	21	19.5	15.5	24.5	23.5	26	13
	1, 2	3, 2/12	3,8, 2/12	3,6, 2/12	3,6		8	1,8, 2/12	1,2/12	1,3,4, 2/12	3,4,5	3,5,8	3,4,5,6	2,3,4, 5,6	2,3,4, 5,8	2,3,5	3,5/9	5/9	6,8, 5/9
मिथुन	मृगशिरा	27	18	22	19.5	27	20	28	33	31.5	19	12	14	23.5	19.5	28.5	31.5	34	21
	3, 4	3,5	3,5,8	3,5,6	3,6, 2/12	2/12	8,2/12	8		3,4	2,3,4,5, 2/12	2,3,5,8, 2/12	2,3,4,5, 6,2/12	2,3,4,6	2,3,4,8	2,3	3		6,8
	आर्द्रा	19	27	21	18.5	24.5	26	34	28	25	12.5	20	13	23.5	29.5	21.5	24.5	24.5	27
	दोष	3,5,8	3,5	3,5,6	3,6, 2/12	3,2/12	2/12		8	4,8	2,4,5,8, 2/12	2,3,5, 2/12	2,3,4,5, 6,2/12	2,3,6	2,3	2,3,8	3,8	3,8	4,6
	पुनर्वसु	20	27	23	20.5	22.5	23.5	31.5	24	28	15.5	22.5	17	22.5	26.5	21.5	24.5	25.5	27.5
	1, 2, 3	3,5,8	3,5	3,5,6	3,6, 2/12	3,4, 2/12	3,4, 2/12	3,4	4,8	8	2,5,8, 2/12	2,5,2/12	2,3,5,6, 2/12	2,3,4,6	2,3,4	2,3,8	3,8	3,8	3,6

पञ्चाङ्ग का स्वरूप

तिथिवारं च नक्षत्रं योगः करणमेव च।
यत्रैतत्पञ्चकं स्पष्टं पञ्चाङ्गं तन्निगद्यते॥
जानाति काले पञ्चाङ्गं तस्य पापं न विद्यते।
तिथेस्तु श्रियमाप्नोति वारादायुष्यवर्धनम्॥
नक्षत्राद्हरते पापं योगाद्भोगनिवारणम्।
करणात्कार्यसिद्धिः स्यात्पञ्चाङ्गफलमुच्यते॥

“पञ्चाङ्गस्यफलंश्रुत्वागङ्गास्नानफलंलभेत॥”

तिथि, वार, नक्षत्र, योग तथा करण— इन पाँचों का जिसमें स्पष्टमाना दि रहता है उसे पञ्चाङ्ग कहते हैं। जो यथासमय पञ्चाङ्ग का ज्ञान रखता है उसे पाप स्पष्ट नहीं कर सकता। तिथि का श्रवण करने से श्री (लक्ष्मी) की प्राप्ति होती है, वार का श्रवण करने से आयु की वृद्धि होती है, नक्षत्र श्रवण पाप को नष्ट करता है, योग के श्रवण से रोग का निवारण होता है और रोग के श्रवण से कार्य की सिद्धि होती है, यह पञ्चाङ्ग का फल कहा गया है। पञ्चाङ्ग के फल को सुनने से गङ्गा स्नान का फल प्राप्त होता है।

तिथियों के स्वामी

प्रतिपदा	—	अग्नि
द्वितीया	—	ब्रह्मा
तृतीया	—	पार्वती
चतुर्थी	—	श्रीगणेश
पञ्चमी	—	सर्प
षष्ठी	—	सूर्य
सप्तमी	—	सूर्य
अष्टमी	—	महादेव (शंकर)

नवमी	—	दुर्गा माँ
दशमी	—	यमराज
एकादशी	—	विश्वेदेव
द्वादशी	—	भगवान विष्णु
त्रयोदशी	—	कामदेव
चतुर्दशी	—	भगवान शिव
पूर्णिमा	—	चन्द्रमा
अमावस	—	चन्द्रमा

तिथियों की संज्ञा

नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा
१	२	३	५	५
६	७	८	९	१०
११	१२	१३	१४	१५

तिथियों में प्रशस्त कृत्य

1. **नन्दा**— चित्रोत्सव, वास्तु, तान्त्रिक कार्य, गृहारम्भ, नृत्यादि।
2. **भद्रा**— विवाह, अलङ्कार सम्बन्धी कार्य, यात्रा, रेलयात्रा बाहन बनवाने का कार्य, पौष्टिक कार्य।
3. **जया**— युद्ध और बल के उपयुक्त कार्य सिद्धि।
4. **रिक्ता**— विद्वत्ता, ब्राह्मण, बन्धन, अभिघात, जहर, अग्नि और शस्त्र सम्बन्धी कार्यों की सिद्धि होती है।
5. **पूर्णा**— माङ्गल्य, विवाह, यात्रा, पौष्टिक और शान्ति कर्म “अमावस्या में केवल पितृकार्य, माङ्गलिक शुभकार्य यात्रादि वर्जित है।

कार्य सिद्धि में निषिद्ध तिथि

षष्ठी तिथि में तेल, अष्टमी में मांस भक्षण, चतुर्दशी में हजामत, अमावस्या (पञ्चपर्वों) में मैथुन नहीं करना चाहिए।

दैनिक लग्न सारणी अप्रैल भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जम्मू 2026

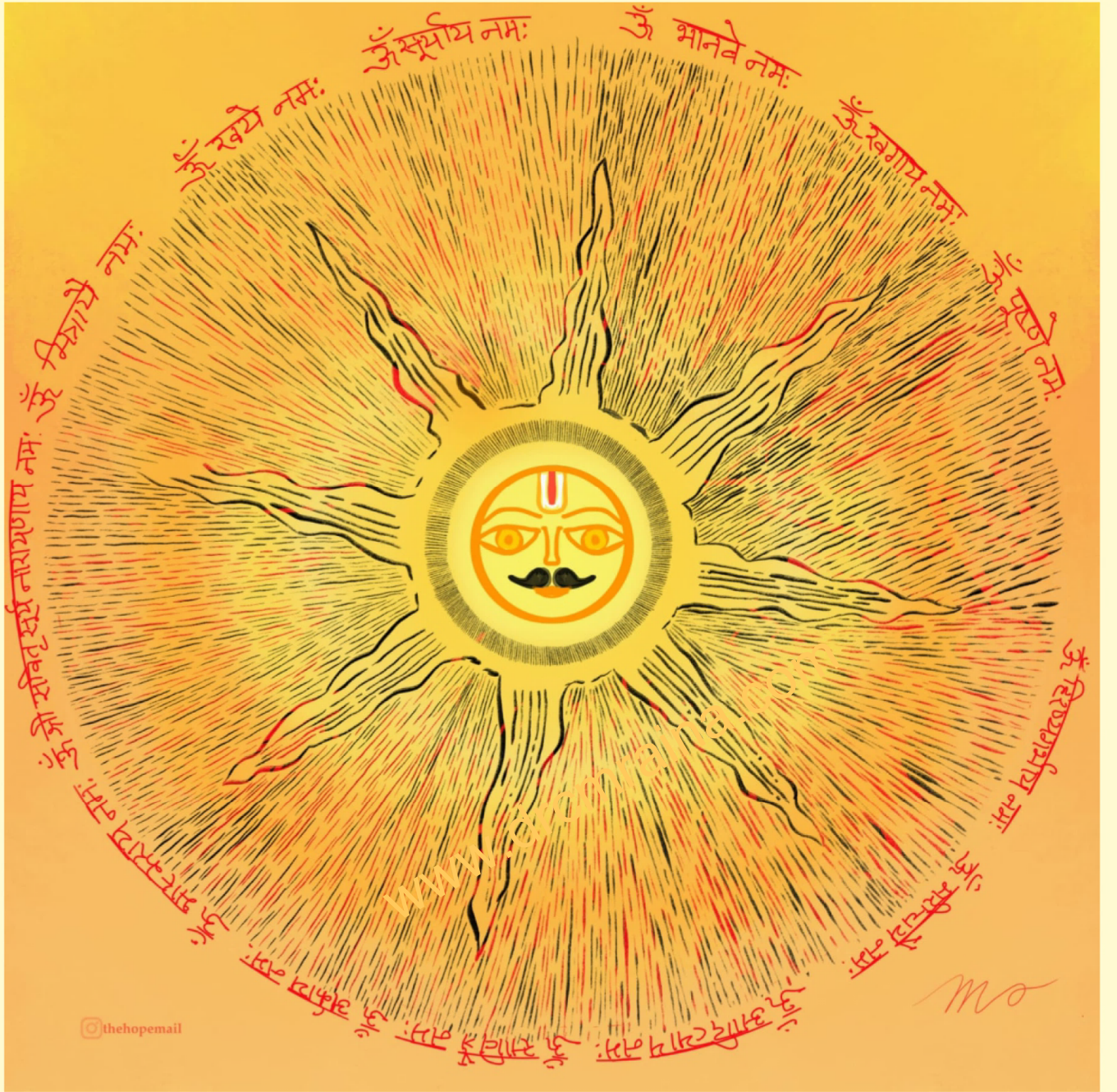
अप्रैल तारीख	मीन घ. मि.	मेष घ. मि.	वृष घ. मि.	मिथुन घ. मि.	कर्क घ. मि.	सिंह घ. मि.	कन्या घ. मि.	तुला घ. मि.	वृश्चिक घ. मि.	धनु घ. मि.	मकर घ. मि.	कुम्भ घ. मि.
1	06:58	08:29	10:22	12:38	15:02	17:23	19:44	22:08	00:33	02:35	04:14	05:37
2	06:54	08:25	10:18	12:34	14:58	17:20	19:40	22:04	00:29	02:32	04:10	05:33
3	06:50	08:21	10:14	12:30	14:54	17:16	19:37	22:00	00:25	02:28	04:06	05:29
4	06:46	08:17	10:10	12:26	14:50	17:12	19:33	21:56	00:21	02:24	04:02	05:25
5	06:42	08:13	10:07	12:22	14:46	17:08	19:29	21:52	00:17	02:20	03:59	05:22
6	06:38	08:09	10:03	12:18	14:42	17:04	19:25	21:48	00:13	02:16	03:55	05:18
7	06:34	08:05	09:59	12:14	14:38	17:00	19:21	21:44	00:09	02:12	03:51	05:14
8	06:30	08:01	09:55	12:10	14:34	16:56	19:17	21:40	00:05	02:08	03:47	05:10
9	06:26	07:57	09:51	12:06	14:30	16:52	19:13	21:36	00:01	02:04	03:43	05:06
10	06:22	07:53	09:47	12:03	14:26	16:48	19:09	21:33	23:53	02:00	03:39	05:02
11	06:18	07:50	09:43	11:59	14:22	16:44	19:05	21:29	23:49	01:56	03:35	04:58
12	06:14	07:46	09:39	11:55	14:19	16:40	19:01	21:25	23:45	01:52	03:31	04:54
13	06:10	07:42	09:35	11:51	14:15	16:36	18:57	21:21	23:41	01:48	03:27	04:50
14	06:07	07:38	09:31	11:47	14:11	16:32	18:53	21:17	23:37	01:44	03:23	04:46
15	06:03	07:34	09:27	11:43	14:07	16:28	18:49	21:13	23:34	01:40	03:19	04:42
16	05:59	07:30	09:23	11:39	14:03	16:25	18:45	21:09	23:30	01:37	03:15	04:38
17	05:55	07:26	09:19	11:35	13:59	16:21	18:41	21:05	23:26	01:33	03:11	04:34
18	05:51	07:22	09:15	11:31	13:55	16:17	18:38	21:01	23:22	01:29	03:07	04:30
19	05:47	07:18	09:12	11:27	13:51	16:13	18:34	20:57	23:18	01:25	03:03	04:26
20	05:43	07:14	09:08	11:23	13:47	16:09	18:30	20:53	23:14	01:21	03:00	04:23
21	05:39	07:10	09:04	11:19	13:43	16:05	18:26	20:49	23:10	01:17	02:56	04:19
22	05:35	07:06	09:00	11:15	13:39	16:01	18:22	20:45	23:06	01:13	02:52	04:15
23	05:31	07:02	08:56	11:11	13:35	15:57	18:18	20:41	23:02	01:09	02:48	04:11
24	05:27	06:58	08:52	11:07	13:31	15:53	18:14	20:37	22:58	01:05	02:44	04:07
25	05:23	06:54	08:48	11:04	13:27	15:49	18:10	20:34	22:54	01:01	02:40	04:03
26	05:19	06:51	08:44	11:00	13:23	15:45	18:06	20:30	22:50	00:57	02:36	03:59
27	05:15	06:47	08:40	10:56	13:20	15:41	18:02	20:26	22:46	00:53	02:32	03:55
28	05:11	06:43	08:36	10:52	13:16	15:37	17:58	20:22	22:42	00:49	02:28	03:51
29	05:08	06:39	08:32	10:48	13:12	15:33	17:54	20:18	22:39	00:45	02:24	03:47
30	05:04	06:35	08:28	10:44	13:08	15:29	17:50	20:14	22:35	00:41	02:20	03:43

सम्पादक परिचय



डॉ० चन्द्रमौलि रैणा

- नाम : डॉ. चन्द्रमौलि रैणा
माता / पिता : श्रीमती शान्ति देवी, पं. रामेश्वर दत्त रैणा
जन्म स्थान : पौराकोटला (शिवखोड़ी धाम), जिला रियासी (जम्मू कश्मीर)
शिक्षा : शास्त्री, फलितज्योतिषाचार्य, सिद्धांत ज्योतिषाचार्य, विद्यावारिधि (पीएच.डी.)
भाषाज्ञान : संस्कृत, हिन्दी, इंग्लिश, डोगरी एवं पंजाबी
सेवावृत्ति : केन्द्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय, श्री रणवीर परिसर, कोट भलवाल, जम्मू से सहाचार्य ज्योतिष विभाग से सेवानिवृत्त।
सम्मान : महामहिम राज्यपाल महोदय माननीय, लोकसभा सदस्यों तथा गणमान्य जनप्रतिनिधियों द्वारा विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यों में अभूतपूर्व योगदान हेतु सम्मानित, सनातन धर्म पथ परिषद् केन्द्र, पठानकोट के संज्ञान से 'लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड-2024', केन्द्रिय ब्राह्मण सभा, पठानकोट से 'लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड 2024', NAKSHATRA 27 RESEARCH CENTRE FOR ASTROLOGICAL SCIENCES UNIVERSITY (TRUST) ISO9001-2015 Certified से 'ज्योतिषीय पञ्चविभूषण अवार्ड 2024', SHREEPATI ASTROVAASTU CONSULTANCY (Regd.) International Astrology and Vaastu Conference SMVD University, Katra (J&K), Life Time Achievement Award, 2023, Cosmic Healer Star Award-2022, भगवान परशुराम राष्ट्रीय पण्डित परिषद् ट्रस्ट, जयपुर 'अपराकाशी ज्योतिषरत्न सम्मान'।
सम्पादन : विभिन्न समाचारपत्रों एवं पत्रिकाओं में संस्कृत, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषाओं में आलेख प्रकाशित।
प्रकाशन : 'धर्म भास्कर' कैलेण्डर, श्रीराघवेन्द्र पञ्चाङ्गम्, शास्त्रसौरभम् में सम्पादक एवं वृद्ध वसिष्ठसंहिता भाग 1-2 (सम्पादक एवं हिन्दी अनुवादक), श्री बाबा अमरनाथ वर्फानी जी की पूजा पद्धति (सम्पादक एवं संकलनकर्ता) 'कश्यपसंहिता' हिन्दी रूपान्तर सहित प्रकाशित, प्रकाशक चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी (उ.प्र.)
समाजसेवा : डोगरा ब्राह्मण प्रतिनिधि सभा, चाणक्य चौक परेड एवं बावा कैलखदेव प्रबन्धक कमेटी जम्मू में सक्रिय भूमिका तथा श्री अमरनाथ जी श्राइन बोर्ड के भूतपूर्व सदस्य, सनातन धर्म पथ परिषद् प्रधान (जम्मू-कश्मीर), श्रीशिवखोड़ी श्राइन बोर्ड के सदस्य
संचालक : श्रीराघवेन्द्र ज्योतिष संस्थान (पञ्जीकृत), जम्मू
सम्पर्क सूत्र : 09419194230, 6005569931
ई मेल : drcmraina@gmail.com



तमोघ्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने। कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नमः॥

आप अज्ञान और अंधकार के नाशक, जडता एवं शीत के निवारक तथा शत्रु का नाश करने वाले हैं, आपका स्वरूप अप्रमेय है। आप कृतघ्नों का नाश करने वाले, सम्पूर्ण ज्योतियों के स्वामी और देवस्वरूप हैं, आपको नमस्कार है।

The artwork depicts the Sun that represents the guiding force and essence of this Panchang. The Sun is the symbol of Lord Shri Ram who we worship and consider as our inspiration. Shri Raghvendra Panchang is a mission dedicated to bringing Sanatan Dharma in everyday lives of people.

Artwork by : **Dr. Mahima Raina**
For more spiritual artwork, please check @thehopemail on Instagram